अचूकवाणी

(कविता संग्रह)

सतीश मिश्र 'अचूक'

शब्दांकुर प्रकाशन
SHABDANKUR PRAKASHAN

अचूकवाणी

(कविता संग्रह)

ISBN : 978-81-953081-4-9

रचनाकार
सतीश मिश्र 'अचूक'

संस्करण : प्रथम, 2021
मूल्य : ₹200/-

सर्वाधिकार
लेखकाधीन

टाइपसेटिंग
सुनैना

आवरण
के. शंकर

मुद्रक
आर्यन डिजिटल प्रेस, दिल्ली

प्रकाशक
शब्दांकुर प्रकाशन
J-2nd-41, मदनगीर, नई दिल्ली 110062
दूरभाष : 09811863500
Email: shabdankurprakashan@gmail.com
www.shabdankurprakashan.com

समर्पण

प्राणवायु के बिना देश में जिनकी बची न जान
दवा, बेड, इंजेक्शन के बिन खो दी है पहचान
उन्हें समर्पित यह 'अचूकवाणी' मेरी,
परिजन जिनके शोक मगन हैं गाते दुखमय गान

एक पेड़ उनके नामों से लगवा दो हे मित्र
ताकि ऑक्सीजन आगे भी बन ना पाये इत्र
प्राणवायु की खान बनाओ अपने घर आंगन में,
पेड़ लगाकर भारत अपना कर दो आज पवित्र

शुभकामना संदेश

प्रिय सतीश मिश्र जी,

यह जान कर प्रसन्नता हो रही है कि आपके द्वारा विभिन्न विषयों पर रचित कविताओं की पुस्तक अचूकवाणी का प्रकाशन कराया जा रहा है। इसमें देव स्तुति, कोविड दुष्प्रभाव व उससे बचाव हेतु प्रयासों, सम-सामयिक रचनाओं के अलावा कोविड जागरूकता और पीलीभीत जिले की सुंदरता व पर्यटन पर भी आपने अपनी लेखनी चलाई है। उम्मीद है कि हम सबके प्रयास से बदलते पीलीभीत की सुंदर तस्वीर आपकी रचनाओं के द्वारा उजागर होने से जनपद को देश दुनिया में एक अलग पहचान मिलेगी।

इससे पूर्व प्रकाशित हुईं आपकी पुस्तकें मातेश्वरी गूँगा देवी, कलियुग के भगवान और लॉकडाउन के शॉक को जनपद से लेकर देश दुनिया में सराहा गया है। जन-जागरूकता हेतु किये जा रहे आपके यह प्रयास सराहनीय व स्वागतयोग्य हैं।

आपकी नई पुस्तक अचूकवाणी के सफल प्रकाशन के लिए मेरी तरफ से आपको हार्दिक शुभकामनाएं। आशा करता हूँ कि जन-जागरूकता की मशाल आप यूँ ही रोशन करके सम्पूर्ण जगत को प्रकाशवान करते रहेंगे।

वरुण गांधी
वरिष्ठ भाजपा नेता एवं
सदस्य लोक सभा
लोकसभा निर्वाचन क्षेत्र-पीलीभीत
निवास-नई दिल्ली

शुभकामना संदेश

आदरणीय मिश्र जी,

मुझे यह जानकर अति प्रसन्नता हुई कि आपके द्वारा अपनी स्वरचित विभिन्न कविताओं की चतुर्थ पुस्तक 'अचूकवाणी' का प्रकाशन कराया जा रहा है। इससे पहले आपकी पुस्तक मातेश्वरी गूँगा देवी के द्वारा माती वाली मइया की महिमा सभी ने जानी। कलियुग के भगवान में आपकी व्यंग्य शैली और प्रत्येक विषय पर पैनी नजर देखने को मिली। गत वर्ष कोरोना काल में प्रकाशित हुई आपकी लॉकडाउन के शॉक पुस्तक में आपने जनता को होने वाले दुख-दर्द, सरकारी व निजी स्तर की मदद, मजदूरों की व्यथा, बदले वातावरण आदि विषयों पर काव्य चित्र संजोए हैं। जिनकी जनमानस में काफी सराहना हो रही है।

'अचूकवाणी' में आपने ईश आराधना, कोविड की दूसरी लहर के असर के साथ त्योहारों, मीडिया व समाज पर पड़ने वाले दुष्प्रभावों की तस्वीर भी अपनी रचनाओं में दिखाई है। पीलीभीत के पर्यटन गीत में आपने यहाँ की सुंदरता का ऐसा बखान किया है कि इसे पढ़कर पर्यटक पीलीभीत आने को मजबूर हो जाएंगे। आकाशवाणी, माता, पिता व अनमोल जिंदगी, राम मंदिर, भारत रत्न अटल बिहारी बाजपेयी पर लिखीं काव्य रचनाएं पाठकों को इन्हें पढ़ने हेतु विवश करेंगी। आपके द्वारा किसी भी विषय पर तत्काल कविता तैयार कर देने पर लोग भले ही विश्वास न करें परन्तु मैंने कई बार ऐसा करते हुए कविवर श्री सतीश मिश्र 'अचूक' जी को देखा है। मुझे विश्वास है कि आपकी नई पुस्तक अचूकवाणी निश्चित ही ऐसी ही अचूक रचनाओं का संकलन होगा और यह सभी को पसंद आएगी।

मैं इस नई पुस्तक 'अचूकवाणी' हेतु रचनाकार श्री सतीश मिश्र जी को अपने व पूरनपुर की जनता की तरफ से हार्दिक शुभकामनाएं देता हूँ और ईश्वर से प्रार्थना करता हूँ कि वो आपकी लेखनी को और अधिक अचूक बनाएं। पुनः मंगल कामनाएं स्वीकारें।

बाबूराम पासवान
विधायक, भाजपा
129 विधान सभा क्षेत्र पूरनपुर
जनपद-पीलीभीत उप्र

भूमिका

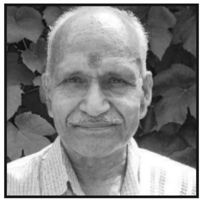

काव्यं यशसे अर्थकृते व्यवहारविदे शिवेतरक्षये
सद्यःपरिनिर्वर्तये कान्तासम्मित उपदेशयुजे।

काव्यप्रकाश के रचयिता आचार्य मम्मट ने काव्य के छः प्रयोजन बताये हैं। वर्तमान समय में कवियों का मुख्य प्रयोजन यश एवं अर्थ प्राप्ति ही प्रमुख रूप से रह गया है। अन्य चार प्रयोजन गौण हो गए हैं, किन्तु आज भी माता वीणापाणि के आशिष पीयूष से आप्लावित कुछ साहित्यकार हैं जो अर्थ प्राप्ति को गौण मानकर समाज को नयी दिशा देने तथा शासकों को उनकी त्रुटियों, भूलों की ओर काव्य के माध्यम से इंगित करने के पावन कार्य में संलग्न हैं। श्री सतीश मिश्र हमारे क्षेत्र के ऐसे ही साहित्यकार हैं जो पत्रकारिता के साथ-साथ अपने सारस्वत प्रयासों से हिन्दी साहित्य के कोष की श्रीवृद्धि में संलग्न हैं।

सतीश मिश्र 'अचूक' अपनी लेखनी से निरंतर अपनी भावनाओं के पुष्पस्तबक जनमानस के समक्ष प्रस्तुत करते रहते हैं। समाज में घटित होने वाली घटनाओं, राजनैतिक परिदृश्यों, प्राकृतिक मनोरम दृश्यों जिनकी हमारे जनपद व देश में प्रचुरता है का वर्णन चित्रण करते रहते हैं। शासन द्वारा किए गए जनहित के कार्यों की सराहना के साथ साथ सरकार की जनविरोधी नीतियों तथा कानूनों का मुखर विरोध भी करते हैं। इनकी लेखनी समाज के सभी वर्गों की पीड़ा का चित्रण समान रूप से करती है। इनकी संवेदनशीलता, सजगता एवं साहित्य साधना को देख कर बरबस कह उठता हूँ-

जनमानस जब विविध रूप से पीड़ित होता है।
हृदय द्रवित हो उठता कवि के प्राण तड़पते हैं।
संवेदना मुखर होती तब भाव सुमन झरते।
लेखनी मचल उठती कवि की गीत निकलते हैं।

श्री सतीश मिश्र 'अचूक' जी की इससे पूर्व तीन काव्य कृतियाँ 'मातेश्वरी गूँगा देवी', 'कलियुग के भगवान' और 'लॉकडाउन के शाक' प्रकाशित हो चुकी हैं, जो जनसामान्य में पर्याप्त लोकप्रिय रहीं। इसी श्रंखला में 'अचूकवाणी' नाम से प्रकाशित होने वाला यह चतुर्थ काव्य संग्रह है।

इस काव्य संग्रह में मुक्तक, दोहा, कुण्डलिया, सवैया, घनाक्षरी, मनहर एवं मुक्त छन्दों के द्वारा अपनी भावनाओं की अभिव्यक्ति की है। देवशक्तियों की वन्दना, आराधना, प्रकृति चित्रण, कोरोना वैश्विक महामारी के कारण उत्पन्न सामाजिक समस्याएं और उनका समाज पर प्रभाव, सरकार तथा जनता के प्रयास, पर्यावरण, पर्यटन, जनपद पीलीभीत की सुंदरता, वन सम्पदा, चूका पिकनिक स्पाट, आकाशवाणी रामपुर की पचपन वर्ष की सफल यात्रा, जनपद में फिल्मसिटी की मांग, मीडिया पर कोविड प्रभाव, किसानों की पीड़ा, लाकडाउन की शादी, डाउनलाकी रक्षाबंधन, माँ की महिमा, पिता का महत्व आदि अनेक विषयों से सम्बंधित शताधिक रचनाएँ संग्रहीत हैं।

इस काव्य संग्रह में अचूक जी ने सर्वप्रथम पूज्य विघ्न विनाशक गणेश जी का स्तवन किया है। इसके पश्चात वंदना की श्रंखला में संकट मोचन हनुमान जी, श्री रामचंद्र जी, माँ बगुलामुखी, मातेश्वरी गूंगा देवी, माँ पीतांबरा देवी, गौरी शंकर, गुरु ही त्रिदेव, बाबा इकोहत्तरनाथ के स्तवन के साथ गुरु गोविंद दोनों का स्मरण करते हुए गुरु शिष्य संबंधों पर भी लेखनी चलाई है। इसके पश्चात जन्म दात्री माँ, जरा सोचो दुनिया में माता ना होती, माता, माँ की महिमा शीर्षक रचनाओं से मातृ वंदना भी की है। इसके पश्चात विविध समसामयिक विषयों पर सरल सुबोध भाषा में लेखनी चलाई है। यथा प्रभु श्री राम जी का मंदिर निर्माण, मन मंदिर में राम बसे हैं, मुहूर्त में श्री राम जी का स्मरण, परशुराम जी से प्रार्थना के साथ ब्रज के दर्शन भी कराए हैं।

शहीदों के प्रति शीर्षक से शहीदों का स्मरण भी किया है। कवि ने आदर सहित वीर राणा प्रताप, पंडित रामप्रसाद बिस्मिल, सुभाषचंद्र बोस के साथ पूर्व प्रधानमंत्री भारत रत्न पंडित अटल बिहारी वाजपेयी का स्मरण भी किया है। लॉकडाउन की दूसरी लहर का पूरा दर्शन रचनाओं में हो जाता है। सावन, किसानों

की पीड़ा, अनमोल जीवन, परिवार नियोजन के माध्यम से विविध प्रकार की विसंगतियों की ओर इंगित किया है। मन की गठरी में आकाशवाणी रामपुर की 55 वर्ष की सफल यात्रा का चित्रण किया है। हरियाली तीज, बिजली, प्रेम दिवस, टेडी दिवस, दूध की नदियां, नाग पंचमी, जाग उठे नाग, कोविड रूपी सांप, मीठी रबड़ी, वर्चुअल संवाद में उनकी दिक्कतें, अवसरवादी नेताओं पर कटाक्ष किया है। डाउनलाकी रक्षाबंधन के द्वारा मन को गुदगुदाया भी है। अनाचार शीर्षक से 'अचूक' जी ने अचूक व्यंग्य किया है। इस वैश्विक महामारी में छात्रों व शिक्षकों की पीड़ा का वर्णन किया है।

'मुझे वायरस यदि मिल जाता' रचना के द्वारा अपना आक्रोश व्यक्त किया है। इसके अतिरिक्त पीलीभीत में फिल्म सिटी बनाने की मांग को लेकर भी 'फिल्मसिटी' नामक कविता में पुरजोर तर्क दिए हैं। 'पिता' नाम की रचना पिता के महत्व को व्यक्त करती है। प्रकृति वर्णन हेतु पर्यटन नामक रचना है। इसमें मीडिया पर कोविड प्रभाव व कोरोना की दूसरी लहर, जाग उठा मतदाता, आरक्षण से उपजे आक्रोश द्वारा त्रिस्तरीय पंचायत चुनाव की सामाजिक परिस्थिति का सजीव चित्रण किया है। 'आकाशवाणी' नामक रचना में सतयुग से वर्तमान समय तक आकाशवाणी के क्रियाकलापों का चित्रण कर आकाशवाणी के महत्व को बताया है। 'पीलीभीत का पर्यटन गीत' में जनपद के दर्शनीय स्थलों, पौराणिक धार्मिक स्थलों, सुरम्य वनराजि, पी टी आर (पीलीभीत टाइगर रिजर्व) का सुन्दर चित्रण किया है।

सतीश मिश्र 'अचूक' ने अपने अचूक नाम को सार्थक करते हुए सरल, सुबोध भाषा में पाठकों के हृदय में अपना स्थान बनाया है। भाषा में कहीं भी कृत्रिमता के दर्शन नहीं होते। इनकी पूर्व प्रकाशित कृतियों की भाँति 'अचूक वाणी' जन सामान्य में लोकप्रियता के शिखर का स्पर्श करेगी। कवि का यह सारस्वत प्रयास उनके सुयश में वृद्धि करेगा।

ज्येष्ठ पूर्णिमा संवत- २०७८
गुरुवार, 24 जून 2021

पंडित रामअवतार शर्मा, एम.ए. (संस्कृत, हिन्दी) बी.एड
अध्यक्ष, देवनागरी उत्थान परिषद; सम्पादक, व्रतोत्सव पर्व दीपिका
संस्थापक प्रधानाचार्य, पंडित जियालाल इंटर कॉलेज सपहा
निवास-कायस्थान पूरनपुर (पीलीभीत)
9758028560

शुभकामना संदेश

कहा तो जाता है कि 'वाणी' की प्रकृति तीर के समान होती है जो एक बार प्रत्यंचा से छूट गया तो वापस नहीं आता और यह तीर यदि कभी निशाने से न चूका हो तो उसे 'अचूकवाणी' कहा जाता है।

श्री सतीश मिश्र पत्रकार होने के कारण तीरंदाज तो हैं ही परंतु 'साहित्य और कविता' न सिर्फ उनके तीर की धार को बढ़ाती है बल्कि गुणी जनों तक संदेश भी पहुंचाती है।

आपके द्वारा सम-सामयिक विषयों पर कविता रचना कोई नई बात तो नहीं होगी परंतु पत्रकार के अंदर कवि का सौंदर्यबोध आने से पर्यटन, प्रकृति एवं सामाजिक सरोकारों का स्वाद कुछ बदल सा जाता है। इस नए स्वाद का आनंद लें। 'अचूकवाणी' के लिए 'अचूक' जी को अचूक शुभकामनाएं।

डॉ अखिलेश कुमार मिश्रा
वरिष्ठ कवि व सहित्यकार
आईएएस, विशेष सचिव परिवहन विभाग
उत्तर प्रदेश शासन, लखनऊ

शुभकामना संदेश

यह जान कर प्रसन्न हूँ कि अनुज सतीश मिश्र 'अचूक' की चतुर्थ पुस्तक 'अचूकवाणी' शीघ्र प्रकाशित हो रही है। इस पुस्तक में इनकी पूर्व में प्रकाशित 3 पुस्तकों की भांति समाजहित व जनउपयोगी सामग्री है जो पाठकों के मन को हर्षित करने के साथ-साथ दर्पण का भी काम करेगी।

इस पुस्तक में कई ऐसे गीत हैं जिनका फिल्मांकन हो सकता है। मेरे, एक्टर परिधि शर्मा (जोधा) व मेरी पूरी टीम की तरफ से पुस्तक की सफलता हेतु रचनाकार श्री मिश्र जी को अपार शुभकामनाएं।

राम अग्निहोत्री (राम भइया)
प्रोडयूशर, गीतकार
स्पार्क म्यूजिक प्रोडक्शन
मुंबई, महाराष्ट्र

शुभकामना संदेश

वरिष्ठ पत्रकार एवं कवि श्री सतीश मिश्र की पुस्तक 'अचूकवाणी' का प्रकाशन हो रहा है। इस पुस्तक में देव वंदना, सम-सामयिक विषयों पर रचनाएं, पीलीभीत का पर्यटन, विकास, सौन्दर्यीकरण, प्राकृतिक सुंदरता, कोविड प्रोटोकाल व टीकाकरण जागरूकता इत्यादि विविध विषयों पर रचनाएं संकलित की गई हैं।

पुस्तक के माध्यम से जनपद की विविधताओं को एक साथ लाने का प्रयास किया गया है। मैं उम्मीद करता हूं कि श्री सतीश मिश्र की पुस्तक 'अचूकवाणी' लोगों को ना केवल कोविड व उससे उत्पन्न दुष्प्रभावों से उबरने में मदद करेगी बल्कि जीवन को एक नई दिशा व उत्साह के साथ जीने की प्रेरणा देगी।

श्री सतीश जी को पुस्तक के प्रकाशन पर शुभकामनाएं। साथ ही लोगों की समस्याओं पर लगातार 'अचूक' बात करते रहने हेतु साधुवाद।

पुलकित खरे
आईएएस
जिलाधिकारी, पीलीभीत

अपनी बात

मूक होइ बाचाल पंगु चढइ गिरिबर गहन
जासु कृपा सो दयाल द्रवउ सकल कलि मल दहन

जिनकी कृपा से गूँगा बहुत सुंदर बोलने वाला हो जाता है और लँगड़ा-लूला दुर्गम पहाड़ पर चढ़ जाता है, वे कलियुग के सब पापों को जला डालने वाले दयालु भगवान मुझ पर द्रवित हों दया करें।

पावन ग्रंथ श्री रामचरित मानस के मंगलाचरण में महाकवि तुलसीदास जी द्वारा लिखित सोरठा मेरे जीवन पर भी सटीक बैठता हैं। जड़मति होने के बाद भी प्रभु रामचंद्र जी और माँ वीणावादिनी की कृपा रहती है और अज्ञानी होने के बाद भी कुछ न कुछ लिखने की प्रेरणा मिलती ही रहती है। देव कृपा से ही कुछ थोड़ा सा उल्टा सीधा लिख पा रहा हूँ। इसे मामूली जोड़-तोड़ से अधिक कुछ भी नहीं कहा जा सकता। तुकबंदी को मैं यूं ही कविता समझ बैठता हूँ और आप लोग इस पर ही मेरा हौसला बढ़ा कर उस टूटे फूटे लेखन को ही बेहतर बताकर और लिखने को प्रोत्साहित करते रहते हैं।

यह आप सब का प्यार और माँ सरस्वती की कृपा दृष्टि का ही परिणाम है। सर्वप्रथम 2005 में आई मेरी प्रथम कृति 'मातेश्वरी गूंगा देवी' को आप सबने काफी सराहा। उसके बाद एक लंबा अंतराल बीत गया और कुछ लिख कर यूं ही कागज इधर-उधर डाल देने की आदत से अगली पुस्तक प्रकाशित होने में विलंब हुआ। 2019 में 'कलियुग के भगवान' के रूप में इन छोटी-छोटी रचनाओं का संकलन आपके समक्ष पहुंचा।

2020 में जब कोविड ने दस्तक दी और लॉकडाउन प्रारंभ हुआ और इसकी हर छोटी बड़ी गतिविधि पर कुछ न कुछ लिखना शुरू किया तो दो माह में ही 'लॉकडाउन के शॉक' के रूप में तीसरी पुस्तक आप सबके हाथों तक आ गई। हालांकि जून 2020 तक की गतिविधियां ही इस पुस्तक में समाहित हो पाईं थीं। उसके बाद भी

काफी कुछ 2020 में घटा तथा 2021 में फिर से कोविड की दूसरी लहर आई और पहले जैसी या यूं कहें पहले से ही कठिन परिस्थितियां बन गईं। ऐसे में मेरी कलम आप सब के प्रोत्साहन के बाद फिर कुछ ना कुछ लिखने लगी। लॉकडाउन के हालात पर बाद में भी कई रचनाएं लिख गईं। कुछ शुभचिंतकों ने लॉकडाउन के शॉक का अगला अंक यानी लॉकडाउन के शॉक 2 लाने की सलाह दी परंतु इसका विधान फिलहाल नहीं बन पाया।

हालांकि एक गीत में लॉकडाउन की दूसरी लहर का पूरा परिदृश्य लिखने के अलावा लॉकडाउन काल की शादी में नवविवाहिता के अरमानों पर हो रहे कुठाराघात और अवसाद से ग्रस्त लोगों की मनः स्थिति के गीत भी शामिल रहे। इसी बीच उत्तर प्रदेश में पंचायत चुनाव आया जो कोविड की रफ्तार बढाने के अलावा कविता लेखन हेतु काफी कच्चा माल साथ लाया।

चुनाव पर कई छोटी-छोटी रचनाएं कुण्डलिया छंद के माध्यम से लिखता गया। इसके अलावा भी कुछ इधर-उधर की रचनाएं इस बीच लिख गईं थीं तो सोचा क्यों न इन्हें पुस्तक का रूप प्रदान किया जाए। इसी बीच 'शब्दांकुर प्रकाशन' से बात हुई और एक दिन इन सभी रचनाओं को एकत्र कर मेल पर प्रकाशनार्थ भेज दिया। इनको परिमार्जित करने व प्रूफ रीडिंग करने में आदरणीय पंडित राम अवतार शर्मा जी, अध्यक्ष, देवनागरी उत्थान परिषद ने काफी सहयोग किया। उन्होंने इस पुस्तक की भूमिका लिख कर लगातार तीसरी बार उपकार का क्रम जारी रखा। इसके लिए मैं उनका आजन्म ऋणी रहूंगा।

इस पुस्तक का नाम क्या रखूं इस पर भी सोशल मीडिया पर मैंने आप सबसे विचार जानने का प्रयास किया। आप सभी ने काफी अच्छे नाम सुझाए, जिनमें से ही काफी लोगों ने पुस्तक का नाम 'अचूकवाणी' रखने पर बल दिया। यह नाम मुझे भी उपयुक्त लगा और मंथन के बाद अंततः इसे ही फाइनल कर दिया गया। 'अचूक' उपनाम से पुस्तक का नाम देकर आप सब ने मुझे प्रोत्साहन देने का ही काम किया है। पुस्तक के प्रथम पेज के डिजाइन पर भी आप सब की राय महत्वपूर्ण रही।

पुस्तक प्रकाशन में मैं उन सभी महानुभावों का आभार व्यक्त करना चाहता हूँ जिन्होंने छोटी-छोटी रचनाएं लिखने पर हमेशा मुझे प्रोत्साहन दिया। वीडियो या ऑडियो में जिन रचनाओं को मैंने आप सबके समक्ष प्रस्तुत किया उन्हें भी आपने हाथों हाथ लेते हुए काफी सराहा।

इसी प्रोत्साहन के बलबूते मैं आगे लिखने का साहस कर पा रहा हूँ। कविताओं के ऑडियो, वीडियो व फिल्मांकन करने में फिल्मी गीतकार अग्रज श्री राम अग्निहोत्री जी, सुप्रसिद्ध फिल्म अभिनेता श्री राजपाल यादव जी, ड्रीम मैंगो की निदेशक श्रीमती दीपिका चतुर्वेदी जी, धर्मपत्नी श्रीमती लज्जा मिश्रा जी, श्री विपिन मिश्र जी, श्री अर्पण तिवारी जी, मो.नासिर खान जी, नवल किशोर व्यास जी, नमन सक्सेना जी से प्राप्त सहयोग मार्गदर्शन भी प्रशंसनीय है।

मेरी रचनाओं पुस्तकों के प्रचार प्रसार में रामनाथ मिश्र छोटे, पवन, पं. अनिल शास्त्री व अंशुल शास्त्री, विपिन,अवधेश, योगेश, हरिओम, कपिल, रजनीश, दीपक, शिवम, हर्षित, प्रवीण, नरेंद्र, रजत, सत्यम प्रदीप, सुमित, अमित आदि युवाओं की टीम सदैव तत्पर रहती है, इन सभी को प्रगति पथ पर अग्रसर होने हेतु आशीर्वाद देता हूँ। अपनी पुस्तकों के प्रचार प्रसार हेतु सभी सम्मानित मीडिया बंधुओं का भी आभारी हूँ

मैं उन सभी सम्मानित विद्वानों अग्रजों से क्षमा प्रार्थी हूँ जिनके संदेश मेरी पिछली पुस्तकों में प्रकाशित हुए हैं परंतु इस बार मैं उनके संदेश आशीर्वाद समयाभाव के कारण प्राप्त नहीं कर पा रहा हूँ। जिन महानुभावों के चुनिंदा संदेश प्रकाशित हो रहे हैं उनका आभार व्यक्त करता हूँ।

'अचूकवाणी' पुस्तक में मैं कितना कुछ सही व जनोपयोगी लिख पाया हूँ इसका निर्णय आप सब को ही करना है। जैसा जो कुछ लिखा है वह सब आप सब को समर्पित कर दिया है। आपसे अनुरोध है कि अगर रचनाओं में कहीं कोई अशुद्धि हो तो कृपया अज्ञानी समझकर माफ करें और उस गलती से मुझे भी व्यक्तिगत रूप से अवगत कराएं ताकि अगले संस्करण में इसे सुधारा जा सके।

शब्दांकुर प्रकाशन से प्रकाशित हो रही 'अचूकवाणी' पुस्तक ऑनलाइन माध्यमों पर भी उपलब्ध रहेगी और इसकी ई-बुक भी आप सबको मिल जाएगी। कोशिश यह भी रहेगी कि इसकी ऑडियोबुक भी तैयार कराई जाए ताकि अधिकाधिक लोग कविताओं का रसपान कर सकें। इन्हीं शब्दों के साथ पुनः आप सभी का आभार। उम्मीद करता हूँ कि यूँ ही मिलता रहेगा आप सबका प्यार। धन्यवाद।

सतीश मिश्र 'अचूक'
(कवि/पत्रकार) पीलीभीत (उत्तर प्रदेश)
मो-9411978000

अनुक्रम

गणेश वंदना	:	19
हनुमान जी	:	20
प्रभु श्रीरामचंद्र जी	:	21
राम नाम	:	21
माँ से प्रार्थना	:	22
मातेश्वरी गूंगा देवी	:	22
माँ पीताम्बरा देवी	:	23
भव्यता	:	23
गौरी शंकर	:	24
गुरु ही त्रिदेव	:	24
बाबा इकोत्तरनाथ जी	:	25
गुरु गोविंद	:	26
गुरु-शिष्य	:	26
जरा सोचो दुनिया में माता न होती	:	27
माता	:	29
प्रभु श्री राम जी का मंदिर निर्माण	:	30
मन मंदिर में राम बसे हैं	:	32
महूर्त	:	32
परशुराम जी से प्रार्थना	:	33
ब्रज दर्शन	:	33
महिमा माँ की	:	34
नेशनल कैडेट कोर (एनसीसी)	:	36
शहीदों के प्रति	:	37
सावन	:	39
शर्मनाक	:	39
अनमोल जीवन	:	40
चेकिंग	:	41
परिवार नियोजन	:	41
मन की गठरी	:	42
बिजली	:	44
हरियाली तीज	:	45
बेटी दिवस	:	45
दूध की नदियाँ	:	46
जाग उठे नाग	:	46
नाग पंचमी	:	47
कोविड रूपी सांप	:	47
मीठी रबड़ी	:	48
वर्चुअल संवाद	:	48
कोरे उपदेश	:	49
पाँच अगस्त	:	49
लॉकडाउन का रक्षाबंधन	:	50
अनाचार	:	52
डाउनलॉकी रक्षाबंधन	:	54
स्कूल बंद	:	56
सूना स्वतंत्रता दिवस	:	56
नेता जी सुभाषचंद्र बोस	:	57
शिक्षक दिवस	:	57
मुझे वायरस यदि मिल जाता	:	58
अचूक के दोहे	:	59
फिल्म सिटी	:	61
अन्नदाता की दुश्वारियां	:	63
दावे	:	63
किसान की भीड़	:	64
अन्नदाता	:	64
लव जेहाद कानून	:	65
मन की बात	:	65
भूख	:	66
चूका पिकनिक स्पॉट	:	66
मिलना कठिन अटल है	:	67
पहचान	:	69
कैमरा	:	70
प्रकृति से प्यार	:	71

वेलेंटाइन वीक	:	72
टेडी डे	:	72
आप भी टेडी	:	73
प्रॉमिस डे	:	73
किस-डे	:	74
बदलाव	:	74
महंगाई	:	75
शिवनगरी	:	75
आरक्षण	:	76
बदलाव यह भी	:	76
दुश्वारी	:	77
मुफ्त में वोट	:	77
कच्ची शराब	:	78
आरक्षण सूची	:	78
वोटर भगवान	:	79
आधुनिक मतदाता	:	79
झूठ का व्यापार	:	80
नामांकन	:	80
मतदान	:	81
जीत	:	81
शुभकामनाएं	:	82
पंचायतीराज दिवस	:	82
लॉकडाउन की शादी	:	83
डाउनलॉक	:	83
सन्नाटा	:	84
फैशन	:	84
मानवता भी लुप्त	:	85
बढ़ता प्रकोप	:	85
मौत की छाया	:	86
नमामि गंगे	:	86
लॉकडाउन की दूसरी लहर के हालात	:	87
निधि वन	:	91
लॉकडाउन काल की दुल्हन की व्यथा	:	92
काल का बबाल	:	95
भाई दिवस	:	95
व्हाट्सऐप के लिए	:	96
किसानों के सवाल	:	97
मीडिया पर कोविड प्रभाव	:	98
टीकाकरण	:	103
पौधारोपण	:	103
अनमोल जिंदगी	:	104
पीलीभीत का पर्यटन गीत	:	106
वीर महाराणा प्रताप जी	:	110
पंडित रामप्रसाद बिस्मिल जी	:	110
बर्षारानी	:	111
युवक टीकाकरण	:	111
बरसाना धाम	:	112
गिरिराज जी	:	112
आकाशवाणी	:	113
पिता	:	117
सुपर ब्रांड	:	119
सुंदरता	:	119

गणेश वंदना

पूजा विधि जानूं नहीं, कर लीजै विश्वास
विघ्न विनाशक कीजिये, सारे विघ्न विनाश
सारे विघ्न विनाश कृपा थोड़ी सी कर दो
रिद्धि-सिद्धि से कहो नजर सेवक पर कर दो
दयावन्त प्रभु के समान दिखता ना दूजा
दीजै इतना ज्ञान रहूं करता मैं पूजा

हनुमान जी

अतुलित बल के धाम हो, कनक सुमेरु शरीर
दैत्य वनों को अनल सम, गुणागार बलवीर
गुणागार बलवीर वानरों के हो स्वामी
रघुपति के प्रिय भक्त आप हो सबसे नामी
कहत 'अचूक' राम को जपते रहते प्रतिपल
थाह न मिलती कभी प्रभू में है अतुलित बल

प्रभु श्रीरामचंद्र जी

नील कमल से सरल हैं, कोमल प्रभु के अंग
जनकनंदिनी सोहतीं प्रभु के बाएं अंग
प्रभु के बाएं अंग हाथ में धनु है सुंदर
तीखे बाण सोहते हैं तुणीर के अंदर
अभिनंदन है राम जी हरो कष्ट की कील
कोमल हैं प्रभु आपके अंग कमल से नील

राम नाम

मनुआ तुम राम का नाम जपो बिन नाम जपे कुछ काम नहीं
दुख भोग सदा सुख लेश नहीं यदि गान किया प्रभु नाम नहीं
बिन नाम जपे सुख आता नहीं कभी जाती है दुःख की शाम नहीं
मरयादा का पालन ही करते अवतार लिए होते राम नहीं

माँ से प्रार्थना

पीत परिधान धार हुई हो विराजमान,
तकिया में आप अब भक्त जन तारतीं
सत्य हो गया है आज, स्वप्न सूर्य गिरि जी का,
मातु निज भक्त जन का न कहा टारतीं
दतिया से आईं मातु बगलामुखी हो आप
अंशुल जी मिश्र करें नित्य माँ की आरती
पीत अम्बरा हो देवि, चरण शरण दीजै,
कीजिये प्रदान ज्ञान मुझे मातु भारती

मातेश्वरी गूंगा देवी

माती वाली 'गूंगा' जी का मंदिर बना है श्रेष्ठ
मइया भक्तजन को सहज ही हैं तारतीं
बिगड़े काम सब के बना देतीं पल में ही
आती मुसीबत जो भी मइया जी ही टारतीं
गलती अनेक करें भक्त कलिकाल के जो
उनको भी माता आप मइया सी दुलारतीं
चरणों में वास खास मांगते 'सतीश' आज
स्वजन के संग करें मइया जी की आरती

माँ पीताम्बरा देवी

पीला ही है मन्दिर भी, पीला ही प्रसाद भी है,
पीत परिधान माँ की शोभा को बढ़ाता है
पीत वसनों में दृष्टिगोचर पुजारी होते,
पीले रंग से अटूट माँ तुम्हारा नाता है
पीत फूल लेकर के भक्तगण आते नित्य,
पीले ही फलों से भोग मैया का लगाता है
पीत वर्णी अम्बको पुकारते 'सतीश' आज,
लगता 'अचूक' जैसे जन्मों का ही नाता है

भव्यता

मंदिर विशाल बना, सत्तर फुट देवी माँ का,
मन्दिर के मध्य बगलामुखी विराजी हैं
शमशान पास माँ को खास लगता सदैव,
तकिया या दतिया में एक सी विराजी हैं
सुषमा असीम भक्त हैं निहारते सदैव,
शोभा तीन लोक में अनूप अम्ब साजी हैं
किस भांति अम्ब के स्वरूप को कहें सतीश,
शब्द मिलते न सभी उपमाएं लाजी हैं

गौरी शंकर

गोरे आप कपूर से, हो करुणा अवतार
आप सृष्टि के सार हो, पहन व्याल गल हार
पहन व्याल गल हार हृदय में बसना स्वामी
पार्वती संग आइ दरस दो अंतरयामी
गौरीशंकर सभी कष्ट हर लो प्रभु मोरे
अंधकार चहुँओर प्रभू लगते हो गोरे

गुरु ही त्रिदेव

गुरु ही ब्रम्हा विष्णु हैं, गुरु ही देव महेश
परम ब्रम्ह गुरुदेव हैं, नवा रहा हूँ शीश
नवा रहा हूँ शीश कृपा का हाथ बढ़ा दो
अन्धकार से घिरा रोशनी थोड़ी ला दो
करता पुनः प्रणाम आप हो मुझको सुर ही
सिखलाया है ज्ञान मुझे यह सारा गुरु ही

बाबा इकोत्तरनाथ जी

भक्तों के सब दुख हरते हैं, पूरी करते अरदास सदा
दर्शन से ही खुश हो जाते, प्रभु का जंगल में बास सदा
जो भी बाधाएं आती हैं, भगवन करते हैं नाश सदा
ले आओ समी, धतूरे फल गौरी शंकर हों खास सदा

भाता है बेलपत्र उनको सूखा ताजा एहसास सदा
उनके भी भाग जगा देते अर्पित करते जो भांग सदा
राहों में कीचड़ पानी भी भक्तों को आता रास सदा
पुल सड़कें जो बनवायेगा होगा बाबा का खास सदा

देवराज ने लिंग थापा करते पूजा अरदास सदा
श्राप मुक्ति भी पाए थे आकर शिव जी के पास सदा
अब पूजा इंद्र शुरू करते प्रण का करते हैं नाश सदा
आओ तड़के बाबा के दर मिल जाएं सुरपति पास सदा

नल घंटा सभी चढ़ाते हैं पूरी करते अरदास सदा
कलियुगी भक्त भी सक्रिय हैं भरते उनमें उल्लास सदा
भक्तों का भोलापन भी तो भोले को आता रास सदा
मेरे भी कष्ट मिटा देना करते 'अचूक' अरदास सदा

भक्तों पर दया दृष्टि रखना अपनेपन का एहसास सदा
जंगल में प्रभु जी रहते हैं पाते 'सतीश' हैं पास सदा

गुरु गोविंद

गुरु गोविंद जब साथ हैं, असमंजस की डोर
किसको प्रथम प्रणाम हो, सोचत हुइ गई भोर
सोचत हुइ गइ भोर अक्ल पर पत्थर डारे
गुरुवर कर दी कृपा बता गोविंद ही तारें
इसीलिए गुरुवर मुझे लगते सच्चे जिन्द
गुरुवर ही बतला रहे 'परम श्रेष्ठ गोविंद'

गुरु-शिष्य

गुरू शिष्य की जगत में, अजब अनोखी रीत
कच्चा कुम्भ तपाइ के, खूब बढ़ाते प्रीत
खूब बढाते प्रीत जीत लेते दिल सबके
हो मनुष्य पर काम सभी करते हो रब के
कमियां देख जरा सी हो जाते हो शुरू
अर्थ समझ कर व्यर्थ ज्ञान देते हो गुरू

जरा सोचो दुनिया में माता न होती

जरा सोचो दुनिया में माता न होती
तो रिश्तों की इतनी ये गाथा न होती
है माता ही जो सबकी जीवन प्रदाता
जनम कैसे होता न होती जो माता

कहो कौन पय पान सबको कराता
उठा गोद उंगली पकड़ कर चलाता
माता बिना दुनिया सारी ही रोती
चुपाता हमें कौन माता न होती

बनकर प्रथम गुरु सलीके न देती
अगर छान वो सारे अवगुण न देती
कदम जो उठा उस पे नजरें न रखती
खिलाती सदा पर स्वयं पहले चखती

सबको निवाला देती रहीं तुम
स्वयं भूख को चकमा देती रहीं तुम
कहो देव कैसे न तुमको बताऊँ
दुनिया को कैसे न गाथा सुनाऊँ

है माता ही जग में परमेश दूजा
कैसे न तेरी करे दुनिया पूजा
खुदा तू ही, गुरु बनके देती सहारा
है दुनियां का तू सेंटाक्लाज न्यारा

वो एक दिन तू ताउम्र उपहार बांटे
तू ही उठाती जो मग में हो कांटे
है लंगर अटूटा तू खाती है जूठा
मनाती है पल में अगर पुत्र रूठा

हुए पुत्र ऐसे तेरा शीश काटा
मगर तूने ममता का सागर न बांटा
कातिल गिरा खैर तू पूछ बैठी
कहाँ पर लगी बेटे तू पूछ बैठी

आया बुढापा तुझे त्याग बैठे
सब कुछ भुलाकर कहो काहे ऐंठे
वो माँ है उसे आप कुछ भी कहो ना
ले लो दुआ कष्ट बिल्कुल सहो ना

अगर मैया रूठी तो कुदरत खफा हो
है आँसू में दम सारा कुनवा सफा हो
वो भगवान है यह कथन गांठ बांधो
सभी कह गए कवि भुलाना न साधो

अगर माँ का दुनियां में अपमान होगा
हो कुदरत खफा दुखी इंसान होगा
ममता लुटाने का फंडा न दूजा
सब मिल करो मित्र माता की पूजा

माता

माता से बढ़कर और कोई इस जग में नहीं महान हुआ
जिसने माँ की सेवा कर ली उसका तत्क्षण कल्यान हुआ
सेवा से मेवा मिल जाती माता से ऐसा है नाता
कर पाओ सेवा अगर नहीं तब भी तो आशिष मिल जाता
जीवन भर पुत्रों को पाले पर रिश्ते बेटे ठुकराते
वे ही कष्टों की वैतरणी में गिरते हैं गोते खाते
माता को नहीं सताना है यह बात गांठ में बांधो ना
ममता की मूर्ति कहे आप गठरी पापों की बांधो ना

प्रभु श्री राम जी का मंदिर निर्माण

है कैसा यह संयोग भला जब मंदिर है बनने वाला
पूरे भारत को घर में ही बंधक करके प्रभु जी डाला

भादों की दुइज बुद्ध दिन पर भूमी का पूजन करवाया
हम पहुंचे नहीं अयोध्या सब पर दर्शन घर से करवाया

कोविड ने कहर मचाया है चौतरफा मुश्किल का डेरा
लड़ता इससे बड़ा साहसी भक्त प्रभू जी है तेरा

मंदिर के लिए लड़े हैं जो उनको भी घर में बैठाया
पैसठ से ज्यादा वालों को घर रहने को है समझाया

कैलाश फंसे भोले बाबा सुमिरन श्री राम नाम वाला
गौरा काशी की सेवा में आमंत्रण भी दिलवा डाला

नंदी के चारा पर मंदी कोरंटीनी दिखता खतरा
बाबा गणेश चूहे पर हैं देखो कुछ उनने है कुतरा

कान्हा की जन्म जयंती भी अब भक्तों है आने वाली
जन मानस में अनुराग पगा बिहँसी अब हर डाली डाली

मिट्टी जल सभी तीर्थों का अब अवधपुरी में है आया
जैसे सब तीरथ के जल से वो भरत कूप था बनवाया

काशी प्रयाग या चित्रकूट हर तरफ दियों की है जगमग
घर घर में नवमी सा उत्सव अब गाँव गली सब हैं जगमग

कीन्हा था शुरू दूरदर्शन जैसे बारह बजने वाले
लाइव दर्शन प्रभु के करके हर्षित थे सब दुनिया वाले

दीवाली आज मना डाली जैसे त्रेता में प्रभु आये
कोविड से भी बचते रहते ना भीड़ कहीं जुटने पाए

उत्सव हर घर में होना है अब नहीं किसी को है रोना
अस्मिता लुट चुकी कई बार अब दुक्ख जरा भी ना ढोना

सब मिल कर बोलो राम नाम यह बिल्कुल ही है मतवाला
सारे कष्टों का नाशक है मन में खुशियाँ भरने वाला

जब मंदिर पूरा हो जाये तो हमको अवध बुला लेना
गलती लिखने में अगर हुई तो प्रभु जी शब्द सजा देना

मन मंदिर में राम बसे हैं

हम पर दुनिया देश हंसे हैं
मन मंदिर में राम बसे हैं
पूरी होने वाली इच्छा,
बाधा विध्न जमीन धंसे हैं
रोते वो जो खूब हंसे हैं
अब मुश्किल में वही फंसे हैं
लगता जैसे सांप डसे हैं
लेकिन उन पर हमें न हंसना,
मन मंदिर में राम बसे हैं

महूर्त

नगरी प्रभु की सज गई, बिखरा है उल्लास
मंगल का अगला दिवस, सबको काफी खास
सबको काफी खास भूमि पूजन की बेला
दिखा राममय देश अवध में भारी मेला
छलक गए दुख भरी सुखों से सुंदर गगरी
देखो आज दीपमाला सी प्रभु की नगरी

परशुराम जी से प्रार्थना

जन्म जयंती पर प्रभू, रख लो सबकी लाज
निज फरसा से मेट दो, कोरोना को आज
कोरोना को आज, रेणुका माँ के जाये
प्रभु के रहते कोई कैसे आंख उठाये
असुर शक्तियों से प्रभुजी की, कभी न बनती
दीप जलाकर सभी मनाओ, जन्म जयंती

ब्रज दर्शन

कान्हा के दरश हेतु, ब्रज में गए हम तो
फूल बिकते मिले थे बड़ी बड़ी डलियन में
फूल भी ऐसे न देखे कभी मैंने अब तक,
अजब सुगंध मिली, कुसुम कलियन में
प्रभु की कृपा हुई तो गंध बिसराइ दई,
प्रेम रस खोजि रहे, ब्रज की गलियन में
बूझि बूझि हारे कोई ठीक से करै न बात,
राधा सी सुबेटी मिली, ब्रज की ललियन में

महिमा माँ की

माँ ममता की खान है, आप लीजिये जान
हाथ रहे सिर पर तभी, है हम सबकी शान
माता के उपकार का, जग में ना है मोल
सारे रिश्ते झूठ हैं, पर माँ का अनमोल
जब तक माँ का साथ है, बच्चे हैं हम लोग
माँ बिछुरत बचपन गया, रहे बुढ़ापा भोग

रहे पेट में मारते, जिसको प्रतिदिन लात
मनुज बने तो सर्वदा, मानों उसकी बात
सेवा करते जाइये, भूलो सब दिन रात
मइया के उपकार को, चुका न पाऊँ भ्रात
गुण से परिपूरन सदा, ना अवगुण का नाम
कैकेयी सी मातु भी, रहे पूजते राम

माता में दिखता नहीं, मुझको कोई दोष
मूरख है वह पुत्र जो, माँ पर करता रोष
नौ महिने की यातना, हँसकर भोगी आप
कष्ट सहे इतने अधिक, सुनकर जाते कांप
सब रिश्तों में स्वार्थ है, पर माता को नाय
गुस्सा मन में हो भला, पर मिलती मुस्काय

भाई बहना आप सब, मइया का वरदान
प्रथम पाठशाला बनीं, पकड़ पुत्र का कान
नीका सब बतलाय के, दिया सर्वदा ज्ञान
दुर्गुण पर पर्दा किया, माँ सम कौन महान
खून माँस सब दे दिया, छवि अपनी की दान
लेशमात्र भी दुख नहीं, रही समझती शान

मइया तू ममतामयी, दीन्हा मुझे शरीर
जन्म लिया तो खुश हुई, तुरत भुलाई पीर
उंगली पकड़ी गोद ले, कीन्हां खूब दुलार
तेरी प्रभुता से मुझे, दिख पाया संसार
हर घर में जब जा नहीं, पाए खुद भगवान
माँ को भेजा प्रभू ने, सके न हम पहचान

जग में जो होता नहीं मइया का अवतार
तो फिर रुक जाता सहज सृष्टी का विस्तार
माँ के चरणों में करूँ, बारम्बार प्रणाम
जाते चूक 'अचूक' हैं, ज्यूँ उधार के दाम
मानों अगर 'सतीश' की खूब बढ़ेगी शान
मइया की पूजा करो भूल सभी भगवान

नेशनल कैडेट कोर (एनसीसी)

सेवा और समर्पण हमने अनुशासन में ढाला
छोटा हूँ पर रुतबा मेरा एनसीसी वाला

भारत माँ की रक्षा के हित तन पर वर्दी पहनी
कायम आजादी रखने को सभी आपदा सहनी
छोटा हूँ पर बड़े बड़े संकट से मेरा पाला
सेवा और समर्पण हमने अनुशासन में ढाला

अनुशासन क्या होता है यह एनसीसी में सीखा
कठिन समय में अच्छा जज्बा हर कैडेट में दीखा
एकरूपता वर्दी की कैडेट सच्चा रखवाला
सेवा और समर्पण हमने अनुशासन में ढाला

खाना खूब बनाते हैं हम टेण्ट लगाना आता
गन से फायर और निशाना मेरे मन को भाता
एनसीसी की फौज देख दुश्मन का हुआ दिवाला
सेवा और समर्पण हमने अनुशासन में ढाला

हो परेड स्कूल, राजपथ हमने कदम बढ़ाए
देशभक्ति के गीत सर्वदा मैंने सुंदर गाये
आओ वीर साथ में मेरे अब यह गाने वाला
सेवा और समर्पण हमने अनुशासन में ढाला
छोटा हूँ पर रुतबा मेरा एनसीसी वाला

शहीदों के प्रति

सदा बलिदान वीरों का याद रखना जरूरी है
शहीदों की चिंताओं पर नमन करना जरूरी है
लिया सरकार ने निर्णय नहीं इनको भुलाना है
गुम चुकी वीरगाथा को हमें फिर से सुनाना है

वीर जो चौरी-चौरा के हमे रस्ता दिखाया था
खत्म हो जुल्म कैसे पूरे भारत को सिखाया था
जिले के शूरवीरों ने बढाई शान भारत की
दामोदर, बैजू, सेवा आवाज बने भारत की

माखन-नत्थूलाल लड़े थे अंग्रेजों से डट कर
खाईं थीं गोलियां, जान दी जरा न पीछे हटकर
हुआ कारगिल युद्ध सुरेंद्र अरु राजेश ने डटकर
प्राणों की आहुति दे डाली लड़े अंत तक डटकर

शहीदों की शहादत जो नहीं बिल्कुल भुलानी है
हुआ बलिदान था कैसे यही गाथा सुनानी है
शहीदों के तराने हम सभी को मिलके गाने हैं
शहीदों की चिंताओं पर हमें मेले लगाने हैं

जहाँ पर खून का कतरा गिरा वो भूमि पावन है
शहीदों की चिताएं सर्वदा गंगा सी पावन हैं
हमें सौगंध लेनी है हमें संकल्प करना है
शहीदों का सफरनामा उजागर मिल के करना है

शहीदों की कहानी दादी माँ नानी से सुननीं है
निबंधों में पिरोकर वीरगाथा हमको बुननी है
हमारी पाठ्य पुस्तक में शहीदों की कथा लिख दो
सहे थे जुल्म कितने सब सितम बागी व्यथा लिख दो

शहीदों की कहानी हम सभी को खूब गानी है
उठो कवियों शहीदों पर नई कविता सुनानी है
हृदय माँ का प्रफुल्लित आज होगा अपने भारत में
शहीदों को कोई अपना मिला है आज भारत में

चूकना मत युवाओं अपनी इस चढ़ती जवानी में
तुम्हीं को जान भरनी है शहीदों की कहानी में
कर्ज में हम सभी डूबे शहीदों के ऋणी हैं हम
अभी तक अनकही गाथा सुनाने आ गए हैं हम

चुका हम ब्याज ना पाए मगर अब मूल तो दे दो
गमों में घिर चुके परिजन उन्हें एक फूल तो दे दो
है सच्ची ईश पूजा यह शहीदों के तराने हों
आरती बाद में पहले वीरता गीत गाने हों

सावन

सावन डाउनलॉक है, रहा मंद गति रेंग
ट्वीटर पर झूला पड़ा, व्हाट्सऐप पर पेंग
व्हाट्सऐप पर पेंग ऑनलाइन है मेहंदी
गीत मनोहर इंस्ट्राग्रामी आल्हा कह दी
नांगपंचमी दूध पिलाती तीजें भी मनभावन
रक्षाबंधन बाट जोहता है बैरी सा सावन

शर्मनाक

जिनके पैरों पर गिर-गिर कर तुमने शीश झुकाए थे
हीरो समझा तुम्हे और प्रतिद्वंदी सभी भगाए थे
'लज्जा' आती तुम्हे न उनको 'खालिस्तानी' कहने में,
उनकी सुनते नहीं जीत पर जो तेरी हरषाए थे

अनमोल जीवन

जीवन ईश्वर की थाती है तू उससे थोड़ा डर भइया
जीने का जिम्मा प्रभु सौंपा अपने हाथों ना मर भइया

माना मुश्किल आईं होंगी इस जीवन रूपी लीला में
रुक गई दौड़ बरबस होगी एक मुश्किल रूपी टीला में
मिलकर के उसे बचाना है जो जीवन रूपी है नइया
जीने का जिम्मा प्रभु सौंपा अपने हाथों ना मर भइया

खुद बिक जाते हैं हरिशचंद्र वन वन में रघुवर भटके थे
कान्हा के पग पग कांटे थे ना जीवन पथ से भटके थे
पाते थे ऊर्जा हाथ फेर कहते जिसको माता गइया
जीने का जिम्मा प्रभु सौंपा अपने हाथों ना मर भइया

बापू आजाद और बिस्मिल जीवन निज दांव लगाया था
वो वीर भगत सिंह नामी था गोरों का दिल दहलाया था
भारत माता की रक्षा हित सो जाते थे अंतिम शैय्या
जीने का जिम्मा प्रभु सौंपा अपने हाथों ना मर भइया

जीना है! जी लो जी भरकर मन में ना कोई भ्रम पालो
मरने की चाहत रखते हो तो सेना की वर्दी डालो
कोहराम मचा दो चीन पाक में मच जाये हइया दइया
जीने का जिम्मा प्रभु सौंपा अपने हाथों ना मर भइया

जीवन ईश्वर की थाती है तू उससे थोड़ा डर भइया
जीने का जिम्मा प्रभु सौंपा अपने हाथों ना मर भइया

चेकिंग

मरे हुए को मारना, है दुनिया की रीति
सबकी प्रिय सरकार भी, लाई ऐसी नीति
लाई ऐसी नीति जिसे कहते हैं चेकिंग
नेता हंसते पत्रकार को मिलती ब्रेकिंग
खाली होती जेब इसलिए हर कोइ डरे
गम देता वायरस इधर चेकिंग में मरे

परिवार नियोजन

आया संख्या रोक का, जब तगड़ा कानून
साली गुम ससुराल भी, तभी हो गई सून
तभी हो गई सून चाहते केवल बेटा
साली बिन ससुराल सून जीजा घर लेटा
कहें 'अचूक' नहीं कर पाओगे मनभाया
साली मिलना कठिन समय दुर्गति का आया

आकाशवाणी केंद्र रामपुर की जुबानी, 55 वीं वर्षगांठ की कहानी

मन की गठरी

हूँ पचपन का, दिल बचपन का, मन की गठरी खोल रहा हूँ
चाकू वाला शहर जहां से मीठी बोली बोल रहा हूँ

खत्म रियासत हुई तभी मुझको नबाब ने माँगा
कला प्रेम में आया था मैं पकड़ धुनों का धागा
थे संगीतकार जो अच्छे उनकी तानें बोल रहा हूँ
हूँ पचपन का, दिल बचपन का, मन की गठरी खोल रहा हूँ

केंद्र रामपुर वाला हूँ मैं अब पचपन के पार
माता पिता बताते काफी सुंदर था संसार
सुनते आये ज्ञान अनोखा उसकी गठरी खोल रहा हूँ
हूँ पचपन का, दिल बचपन का, मन की गठरी खोल रहा हूँ

खेती-बाड़ी, फिल्मजगत या सुंदर मधुरिम गाने
महिलाओं के लिए रहे हैं काफी सुखद तराने
मुझको काफी अच्छे लगते मित्रों मन से बोल रहा हूँ
हूँ पचपन का, दिल बचपन का, मन की गठरी खोल रहा हूँ

समाचार भारत, यूपी के होते रिले हमेशा
सुन लो तो फिर असमंजस का रहता नहीं अंदेशा
यही भरोसा कायम मेरा सच्चाई को तौल रहा हूँ
हूँ पचपन का, दिल बचपन का, मन की गठरी खोल रहा हूँ

टीकाकरण, पोलियो हो या फिर चुनाव की बातें
जागरूक करता ही आया दिन हो चाहें रातें
फरमाइश के गीत निराले उनमें भी अनमोल रहा हूँ
हूँ पचपन का, दिल बचपन का, मन की गठरी खोल रहा हूँ

सभी धर्म की बातें सुंदर रामचरित का गान
'मन की बातें' सुनकर करते श्रोता सभी गुमान
मित्रों, बहनों मोदी हूँ मैं 'नभवाणी' से बोल रहा हूँ
हूँ पचपन का, दिल बचपन का, मन की गठरी खोल रहा हूँ

सदा 'सत्य' का साथ रहा है भेदभाव से दूर
गीत और संगीत 'सुंदरम्' दुनिया में मशहूर
'शिव' का प्रिय है सावन तो फिर मैं भी शिव शिव बोल रहा हूँ
हूँ पचपन का, दिल बचपन का, मन की गठरी खोल रहा हूँ

कोरोना से कैसे बचना सबको है समझाया
जीत जाएंगे वैक्सीन से नया भरोसा लाया
सुनता आया अमल कर रहा इसीलिए तो डोल रहा हूँ
हूँ पचपन का, दिल बचपन का, मन की गठरी खोल रहा हूँ

आया है डिजिटल युग जिसके साथ मिलाया काँधा
ई-पेमेंट और ऑफिस में रही न कोई बाधा
लाइव बजता, ऐप निराला, युग का मॉडल रोल रहा हूँ
हूँ पचपन का, दिल बचपन का, मन की गठरी खोल रहा हूँ

'चड्ढा जी मनदीप' निदेशक पूरे करतीं सपने
अच्छी कविता, गीत प्रसारित होते रहते अपने
हूँ 'सतीश मिश्रा' मैं अपने 'मन की बातें' बोल रहा हूँ
हूँ पचपन का, दिल बचपन का, मन की गठरी खोल रहा हूँ

चाकू वाला शहर जहां से मीठी बोली बोल रहा हूँ
हूँ पचपन का, दिल बचपन का, मन की गठरी खोल रहा हूँ

बिजली

आती है! कब जा रही, जरा नहीं अनुमान
हुई बेबफा! खफा है, पूरा हिंदुस्तान
पूरा हिंदुस्तान सुनो ओ बिजली रानी
कहाँ कहाँ चल रही तुम्हारी प्रेम कहानी
अम्मा, पापा, पूत खफा हैं चाचा, नाती
एग्रीमेंट किया फिर बोलो क्यों ना आती

हरियाली तीज

आया है त्योहार शुभ, यह हरियाली तीज
लेकिन डाउनलॉक में, सारी खुशियां सीज
सारी खुशियां सीज कोरोना का भय भारी
झूला मेहंदी जैसी बिखरीं खुशियाँ सारी
झूला कैसे पड़े नहीं कोई बतलाया
सब कहते घर रहो नया कोरोना आया

बेटी दिवस

होते अत्याचार नित, झेल रहा है देश
दिवस एक दिन मना लो, बेटी कीरति शेष
बेटी कीरति शेष बताओ दोष कहाँ है
हमदर्दी झूठी सी दिखती रोष कहाँ है
उत्पीड़न शोषण में बिटिया खाती गोते
बतलाओ यह अनाचार किस कारण होते

दूध की नदियाँ

बहती नदियाँ दूध की, तभी मनाए नाग
दूध नहीं तो किस तरह, जागें सबके भाग
जागें सबके भाग चाय में भी लाचारी
बनता नकली खूब दूध की मारामारी
आलस है मन बसा इसलिए दारिद सहती
दूध मिले ना दारू पी लो नदियाँ बहतीं

जाग उठे नाग

आई है फिर पंचमी, नाग गए सब जाग
नहीं मिल रहा दूध है, फूट गए हैं भाग
फूट गए हैं भाग लॉकडाउन है जारी
नागों तक कैसे पहुँचे पय धार हमारी
कहें 'अचूक' नाग असली नकली पय भाई
नागपंचमी आज अचानक संकट लाई

नाग पंचमी

मिला पंचमी पर मुझे एक अनोखा नाग
दूध पिलाते ही लगा मुझे सुनाने साँग
मुझे सुनाने साँग कहे मैं पाक साफ हूँ
चीनी हूँ पर घर में अपने स्वयं लॉक हूँ
पर भारत वालों से मुझको भारी गिला
पिला रहे हैं खूब दूध ना असली मिला

कोविड रूपी सांप

दूध चढ़ाने जा रहा, टकराया एक सांप
बोला क्या पहचानते, मुझे श्रीमन आप
मुझे श्रीमन आप वायरस हूँ मैं आला
कोविड 19 मगर 20 हूँ सचमुच काला
घूम रहे बाहर अगर यही हमारा दूध
जहर उगलना है मुझे घूम पिलाओ दूध

मीठी रबड़ी

नेता जी का दूध से, बिल्कुल नहीं लगाव
कहते हैं घर बैठकर मीठी रबड़ी खाव
मीठी रबड़ी खाव दूध अब नकली आता
रबड़ी बनने में नकली बिल्कुल जल जाता
गया जमाना बदल दूध बिल्कुल ना लेता
नागपंचमी पर भी रबड़ी खाता नेता

वर्चुअल संवाद

डाउनलॉकी दौर में, नहीं पा रहे घूम
मीटिंग हैं सब वर्चुअल, खूब जूम पर झूम
खूब जूम पर झूम चल रही है नौटंकी
हकलों सी आवाज दिख रहे जैसे मंकी
गड़बड़झाला मचा डींगते बनकर शाकी
समयपास फर्जी विकास है डाउनलॉकी

कोरे उपदेश

देते थे उपदेश वे, बतलाते थे लाभ
हुये कोरोना पॉजिटिव, ना बचाव का लाभ
ना बचाव का लाभ चढ़ गई है बीमारी
अस्पताल में भर्ती आई दिक्कत भारी
घर पर रहना यह शिक्षा हम सब ले लेते
नहीं किया आचरण रह गए शिक्षा देते

पाँच अगस्त

मित्रों पाँच अगस्त है, सचमुच में अविराम
सन उनइस 70 हटी, अब मंदिर प्रभु राम
अब मंदिर प्रभु राम मुहूरत अजब निराला
नामुमकिन था उसको भी मुमकिन कर डाला
अगली 5 अगस्त तक रहना बिल्कुल मस्त
देखो अजब संयोग है मित्रों पाँच अगस्त

लॉकडाउन काल के रक्षाबंधन पर एक भाई की अपनी बहन से अपील

लॉकडाउन का रक्षाबंधन

घर में रहना, मास्क लगाना, अबकी डाउनलॉक
कैसे जीवन बचे सभी का, मन में भारी शॉक

बहना रक्षाबंधन आया, आज श्रावणी प्यारा
लेकिन घटा व्याधि की छाई, है जीवन अँधियारा
आना नहीं मुहल्ला मेरा, सभी तरफ से लॉक
घर में रहना, मास्क लगाना, अबकी डाउनलॉक

राखी मुझे डाक से भेजो, आने में है खतरा
कोविड उन्नीस ने डाले हैं, मुलाकात पर पथरा
प्यार सजीव नहीं मिल पाना, सबसे भारी शॉक
घर में रहना, मास्क लगाना, अबकी डाउनलॉक

इस त्योहार नहीं लाना तुम, बहना कोई मिठाई
मिले पॉजिटिव शहर में मेरे, बहना कुछ हलवाई
आ मत जाये साथ कोरोना, हुआ कलेजा चाक
घर में रहना, मास्क लगाना, अबकी डाउनलॉक

जो आशीष-प्यार आपस का, मोबाइल पर कहना
भीड़ गली-सड़कों पर भारी, बचना मेरी बहना
नहीं पता है कहाँ वायरस, कोरोना की हाक
घर में रहना, मास्क लगाना, अबकी डाउनलॉक

चलती हैं जो बस सरकारी, ले आई है सुविधा
चौबिस घंटे फ्री यात्रा, रखो न मन में दुविधा
सेनीटाइज बस करवाईं, सिस्टम सब बेबाक
घर में रहना, मास्क लगाना, अबकी डाउनलॉक

लोक रीति यदि बहुत जरूरी, मास्क भेजना बहना
सेनिटाइजर की शीशी ला, भीड़ से बचती रहना
ना उपहार माँगना बहना, सब बाजार भी लॉक
घर में रहना, मास्क लगाना, अबकी डाउनलॉक

सेनीटाइज करना राखी, रख एकांत में बहना
बह ना नहीं प्यार में मेरे, है 'अचूक' का कहना
रहे सुरक्षित, मिलना पक्का, अपना रिश्ता पाक
घर में रहना, मास्क लगाना, अबकी डाउनलॉक

कैसे जीवन बचे सभी का, यह ही मन में शॉक
घर में रहना, मास्क लगाना, अबकी डाउनलॉक

अनाचार

बिच्छू भूत पिशाच आजकल हर्षाते
सावन में ना साँप कहीं मारे जाते

लेकिन अपने यहां चाल बिल्कुल उल्टी
धर्म कर्म हैं लुप्त आचरण हैं कुल्टी
हैं साजिश के दौर एकता क्यों गाते
सावन में ना साँप कहीं मारे जाते

महाकाल जीवन देते ही हैं आये
हिंसाकारी यद्यपि उनको ना भाये
राजनीति के गुरुओं से गहरे नाते
सावन में ना साँप कहीं मारे जाते

पलट गई थी गाड़ी हमने था माना
सीने पर गोलियां निशाना क्यों ताना
घिरे हुए हैं आप विरोधी प्रश्न उठाते
सावन में ना साँप कहीं मारे जाते

बदले की भावना सभी ने है जानी
विप्र विरोधी नीति आपकी पहचानी
आतंकी तुमसे क्यों ना मारे जाते
सावन में ना साँप कहीं मारे जाते

अगर पुलिस थी तेज गोलियां क्यों खाईं
सीमा करके सील सुरक्षा बिसराई
कोर्ट कचहरी व्यर्थ हंसी क्यों उड़वाते
सावन में ना साँप कहीं मारे जाते

सांप तभी पलते जब उनको दूध पिलाओ
नेता अफसर कौन पिलाया ढुँढ़वाओ
अब गोलियां उन्हीं पर काहे ना चलवाते
सावन में ना साँप कहीं मारे जाते

मानो 'हत्या ब्रम्ह' आप 'धोपाप' नहाओ
'नैमिषार' आकर के भादों मास नहाओ
'गोमा' तट आकर के क्यों ना शीश नवाते
सावन में ना साँप कहीं मारे जाते

बिच्छू भूत पिशाच आजकल हर्षाते
सावन में ना साँप कहीं मारे जाते

डाउनलॉकी रक्षाबंधन

डाउनलॉकी रक्षाबंधन, बिल्कुल ही मतवाला
मन में था अवसाद इसलिए थोड़ा हास्य निकाला

जीजा आये मास्क लगाए चेहरा दिखता काला
धक्का खाया पैर छुए तो मुश्किल सहित सम्हाला
बोले रहो फर्क से थोड़ा सेनिटाइजर डाला
डाउनलॉकी रक्षाबंधन, बिल्कुल ही मतवाला

बहना राखी लेकर आई बँधने में कठिनाई
बहुत दूर से बाँधी चिमटी से थी गाँठ लगाई
कहती छूने से दिक्कत है कोरोना से पाला
डाउनलॉकी रक्षाबंधन, बिल्कुल ही मतवाला

सुनो! जभी ससुराल गया तो पहना चश्मा काला
कोविड से बचने को सबने चेहरा निज ढक डाला
पैर छुए ढाटाधारी के वही हमारा साला
डाउनलॉकी रक्षाबंधन, बिल्कुल ही मतवाला।

लगी भागने मुझे देखकर सबसे प्यारी साली
कुर्सी मुझ से 20 कदम पर उसने अपनी डाली
हंसती आज मार कर ठट्ठा दिल दिमाग कर काला
डाउनलॉकी रक्षाबंधन, बिल्कुल ही मतवाला

कमरे में जा छुपी हमारी सलहज बड़ी चहेती
मैंने सोचा रूठ गई है तभी भाव ना देती
गया मनाने बिदक गई वो सेनिटाइजर डाला
डाउनलॉकी रक्षाबंधन, बिल्कुल ही मतवाला

लिए आरती सासू माता सहमी पड़ीं दिखाई
बोलीं आने की जहमत तुमने किसलिए उठाई
छज्जे से स्प्रे कर रहीं भरा उसी में हाला
डाउनलॉकी रक्षाबंधन, बिल्कुल ही मतवाला

आइ ससुर जी लगे सुनाने अपनी राम कहानी
कहते तुम्हें अकेले भेजा बेटी बड़ी सयानी
लौटो घर को जल्दी अपने नया वायरस आला
डाउनलॉकी रक्षाबंधन, बिल्कुल ही मतवाला

महज कल्पना, सत्य कहीं है डाउनलॉक कहानी
करो नहीं अफसोस बहुत नाजुक होती जिंदगानी
लड़ना और जीतना मित्रो बड़ी व्याधि से पाला
डाउनलॉकी रक्षाबंधन, बिल्कुल ही मतवाला

डाउनलॉकी रक्षाबंधन, बिल्कुल ही मतवाला
मन में था अवसाद इसलिए थोड़ा हास्य निकाला

स्कूल बंद

शिक्षक भी गमगीन हैं, सारी खुशियां भूल
कई साल से बंद हैं, भारत के स्कूल
भारत के स्कूल, आ गया संकट भारी
सांप छछुंदर जैसी गति हो गई हमारी
बच्चों के भविष्य के तुम हो सच्चे रक्षक
आये संकट बड़ा कभी ना डरते शिक्षक

सूना स्वतंत्रता दिवस

सोंचा होगा ना कभी, होगा ऐसा पर्व
बच्चे अभिभावक यहां, नहीं दिखेंगे सर्व
नहीं दिखेंगे सर्व न होंगे कोइ तराने
कैद घरों में सभी व्याधि के अजब बहाने
कहें 'अचूक' मुझे लगता है भारी लोंचा
है ऐसा माहौल कभी ना होगा सोंचा

नेता जी सुभाषचंद्र बोस

आजादी की जंग में, माँ के सबसे खास
नेता केवल एक ही, कहते जिन्हें सुभाष
कहते जिन्हें सुभाष आपकी शान निराली
इतना ज्यादा खौफ आप जड़ थे वो डाली
'बोस' आप थे 'बॉस' भगे गोरे उन्मादी
'फौज हिंद' कर गठित दिला दी है आजादी

शिक्षक दिवस

गुरू-छात्र सब व्याधि ने, विवश किये हैं आज
हैपी शिक्षक दिवस भी, कहते आती लाज
कहते आती लाज पढ़ाई ठप्प पड़ी है
गुरुओं के वेतन पर मुश्किल बहुत बड़ी है
दिवस तभी शुभ बनेगा करो पढ़ाई शुरू
ज्ञान बढ़े अभ्यास से यही सिखाते गुरू

मुझे वायरस यदि मिल जाता

मुझे वायरस यदि मिल जाता
पंख काटता पकड़ के लाता

कहता सुन ले नीच अधाधम
भाग खत्म कर तू सबका गम
करता उसका तुरत खात्मा
होती सबकी साफ आत्मा

मन में सबके है संदेह
दुबके हुए सभी निज गेह
कोरोना का बजता डंका
मेरा भी मन करता शंका
व्याधि दशानन सी बलशाली,
बने न अपना भारत लंका

साथी भी गमगीन हमारे
कोरंटीन हुए हैं सारे
चुस्की चाय दे रही मुश्किल
घर पर रह, आपस में ना मिल

अचूक के दोहे

गायब होता जा रहा, गुरू शिष्य का प्यार
शिक्षा बनती जा रही, है बिल्कुल व्यापार

मुर्गा संटीं आजकल, है बिल्कुल बेकार
जब से आये मित्रवर, बच्चों के अधिकार

कहते 70 साल से, टरी न दुर्गति मित्र
हमको तो दिख रहे हैं, सब पहले से चित्र

बिंदी भारत मातु की, देती है संदेश
छोड़ विदेशी दो सभी, हिंदी का हो देश

कुछ सालों की बात है, आएगा वो दौर
अंग्रेजी में दिवस यह, हैपी होगा मोर

हालत ऐसी हो गई, खत्म किया रोजगार
पांच साल तक संविदा, हो कैसे स्वीकार

निजीकरण सब कर रहे, मंशा दो बतलाय
बने बनाये देश की, दुर्गति दिखती नाय

गोशाला खुल गईं पर, हैं खेतों में गाय
चेले काफी बढ़ गए, चारा रहे चबाय

धोखा खाते राम जी , इस कलियुग के बीच
मंदिर में भी कमीशन, खाते हैं कुछ नीच

गंगा भ्रष्टाचार की, डुबकी लेउ लगाइ
जैसे भी मिलता जहां, तात लीजिए खाइ

फिल्म सिटी

हम सबकी सुन लेना साहब करना नहीं बहाना
फिल्म सिटी साहब जी तुमको पीलीभीत बनवाना
नगरी जो चलचित्र कहाती चित्र चरित्र बताना
सुंदरता है छुप कर बैठी बाहर लाइ दिखाना

पीटीआर यहां का जंगल सुंदरता की खान
चूका पिकनिक और बाइफरकेशन से पहचान
सप्त सरोवर काफी सुंदर सबको खूब लुभाता
है कैनाल साइफन सुंदर कल कल स्वर जल गाता

है अथाह जलराशि यहां पर कहें शारदा सागर
बीस किलोमीटर में पानी मछली का भी आगर
चूका पिकनिक में रहना तो बुकिंग करा लो घर से
जंगल के बंगलों में रहना मुक्ति दिलाये डर से

नहरों के नीचे से नहरें सभी साइफन न्यारे
वन्य जीव भी काफी सुंदर लगते सबको प्यारे
नैनीताल, कार्बेट, दुधवा पीलीभीत के पास
पर्वत माला भी बिखरी है भरतीं मन उल्लास

जल जंगल जमीन दे देंगे दे दीजे मंजूरी
फिल्म सिटी की सभी खूबियां बनना यहां जरूरी

जो विकसित है उसे बढ़ाना बोलो क्या लाचारी
नकली पर्वत, वन, नहरों के बनने में दुश्वारी

होगा और खजाना खाली सोंचो और विचारों
दावा बिल्कुल ठीक इसलिये आंख मीच स्वीकारो
राजपाल यादव बतलाते फिल्मसिटी के तर्क
नेता अभिनेता में हमको नजर आ रहा फर्क

नौसिखियों की अगर सुनोगे 'सिटी' बनेगी नर्क
भूलो सत्तामद वरना हो जाये बेड़ागर्क
गोमति तट पर फिल्मसिटी का करो आप आयोजन
पाप काट देंगी सब गोमा होगा सफल प्रयोजन

फ्री जमीन और जल जंगल मिल जाएगा बाबा
पिछड़ा बहुत इलाका बन जायेगा काशी-काबा

जितने की जमीन उतने में फिल्म सिटी बन जाए
सुंदरता इतनी होगी जन जन के मन को भाए

माना सड़क वायु अड्डा भी है थोड़ी दुश्वारी
शुरू बरेली में होने से मुश्किल घटे हमारी

सर्वे आप कराओ पहले परखो दावा
तब सच्चा या झूठा जंगल देखो बाबा

अन्नदाता की दुश्वारियां

ट्राली मंडी में खड़ी, पड़ी पराली खेत
गेहूं बोने को पड़ा, मिल गन्ना ना लेत
मिल गन्ना ना लेत समस्या बहुत बड़ी है
घर में चोरी चरपइया मंडी में पड़ी है
पास में नहीं छिदाम जेब है बिल्कुल खाली
हूँ किसान खाली करवा दो 'साहब' ट्राली

दावे

खुशहाली ले आएगा, मित्र खुला बाजार
ढोल पीटकर कह रहे, थे वे तो हर बार
थे वे तो हर बार मगर थी झूठी बानी
लई हकीकत देख खतम हो रही किसानी
दावे में दम नहीं विधेयक बिल्कुल जाली
बेदम हुआ किसान गुम रही है खुशहाली

किसान की भीड़

दिल्ली के दरबार में, है किसान की भीर
बनता लंगर हैं कहीं, कहीं पक रही खीर
कहीं पक रही खीर जलेबी चाय हॉट है
चावल, रोटी, दाल लबालब भरे पॉट हैं
घंटी है तैयार पास ना आती बिल्ली
भीगी सी सरकार घिरी चौतरफा दिल्ली

अन्नदाता

मरने की दहलीज पर, सिर धुनता हर बार
मरा हुआ हूँ, किसलिए, मार रहे हर बार
मार रहे हर बार आंदोलन करने दो
हठ की खोपड़ियों पर दालें अब दलने दो
पाक-साफ हो आप जरूरत तो फिर क्या डरने की
पानी, आंसू गैस झेल हिम्मत करता मरने की

लव जेहाद कानून

मंशा है अब बचेगा, मानवता का खून
लव जेहाद के अंत को, लाये हो कानून
लाये हो कानून स्वयं भी सिखना होगा
'सख्ती पूरी, लव हो सूरी' सिखना होगा
परिजन के संरक्षण की कर दो अनुशंशा
इज्जत रहे सुरक्षित ऐसी रखिये मंशा

मन की बात

जहाँ सुनाते आप हो, सबको मन की बात
उस केंद्र के मान्यवर, समझो कुछ जज्बात
समझो कुछ जज्बात मौन ना होवे बानी
दुनिया कैसे सुन पाएगी कथा कहानी
खोज कराओ सिस्टम कंडम कहाँ-कहाँ
सबको चेंज कराओ गड़बड़ जहाँ-जहाँ

भूख

हाथ पैर चलते नहीं, जाय चेतना सूख
चूहे कूदें पेट में लगती है जब भूख
लगती है जब भूख याद आता है भोजन
खुद लग जाती दौड़ रसोई हो सौ योजन
बिना अन्न के टन्न ना भोजन रखिये साथ
ऋषि मुनि करते तपस्या भूख रखें निज हाथ

चूका पिकनिक स्पॉट

है अथाह जल चौतरफ, गोवा जैसे ठाठ
'चूका' कहते हैं इसे, शुभ पिकनिक स्पॉट
शुभ पिकनिक स्पॉट यहां के दृश्य मनोरम
वाटर थारू और ट्री हट में जाओ रम
प्राणवायु का अगर बढ़े वन जीवन प्रतिपल
वन्य जीव घूमते चौतरफ है अथाह जल

भारत रत्न अटल जी की जयंती पर नमन

मिलना कठिन अटल है

राजनीति मतलबी हो गई सूना पड़ा पटल है
रहो खोजते गुम जाओगे मिलना कठिन अटल है

जो विपक्ष होता था उनके दिल में हरदम रहना
जो भी आप बोलते थे सबका उसमें हां कहना
राजनीति की सफल कहानी अब तो बीता कल है
रहो खोजते गुम जाओगे मिलना कठिन अटल है

जोड़ तोड़ हर मोड़ दीखता छल फरेब से नाता
पल में एमपी और विधायक तोड़ फोड़ कर लाता
छोड़ दिया सिंहासन बोले एमपी एक प्रबल है
रहो खोजते गुम जाओगे मिलना कठिन अटल है

महँगा जब पेट्रोल बैलगाड़ी से संसद आये
लेकिन अब तो सुबह सुबह ही प्रति दिन रेट बढ़ाये
आज तुम्हारे भारत में तो महंगा काफी जल है
रहो खोजते गुम जाओगे मिलना कठिन अटल है

सड़क जाल भारत में फैला नदियां भी लहराईं
अंतिम जन को लाभ मिले यह देते रहे दुहाई
घी अपनों को आज पिलाना ही सच्चा प्रतिफल है
रहो खोजते गुम जाओगे मिलना कठिन अटल है

जिस किसान के लिए आपने अपना सर्वस हारा
फसल मूल्य, सब्सिडी दिलाकर बनते रहे सहारा
आज सड़क पर डेरा डाले नहीं सुरक्षित कल है
रहो खोजते गुम जाओगे मिलना कठिन अटल है

सदा स्वदेशी ही भाया था भारत माँ से नाता
कूटनीति से आप बनाया भारत भाग्य विधाता
अब हमले स्ट्राइक लेकिन सारी कोशिश डल है
रहो खोजते गुम जाओगे मिलना कठिन अटल है

कवि कुल के तुम रहे चितेरे गाई थी सच्चाई
ध्येय रखा कैसे भी होवे भारत देश भलाई
भूल गए हित आज देश का मितरों से सम्बल है
रहो खोजते गुम जाओगे मिलना कठिन अटल है

विप्र वंश के गौरव थे पर सबका साथ निभाया
हिन्दू, मुस्लिम, सिक्ख ईसाई सबको गले लगाया
अब ऐसे कानून जाति धर्मों से जिनमें छल है
रहो खोजते गुम जाओगे मिलना कठिन अटल है

थे सबको स्वीकार आपने गरिमा बृहद बनाई
सरल सौम्य थे आज नहीं दिख पाई है परछाई
अब प्रचंड है अहंकार जो उनका झूठा बल है
रहो खोजते गुम जाओगे मिलना कठिन अटल है

आज सुशासन दिवस मनाकर जो काफी इतराये
खूब समझ लो भ्रष्टाचारी दुःशासन हरषाए
डिजिटल भारत बना रहे पर भ्रष्टाचार डबल है
रहो खोजते गुम जाओगे मिलना कठिन अटल है

आज हवन कर अहंकार की आहुतियां दे डालो
'अटल मित्र है कृषक' आप खुद उसको जाय सम्हालो
अगर न माने खूब सोंच लो राजनीति चंचल है
रहो खोजते गुम जाओगे मिलना कठिन अटल है

राजनीति मतलबी हो गई सूना पड़ा पटल है
रहो खोजते गुम जाओगे मिलना कठिन अटल है

पहचान

पीलीभीत आओगे तो टाइगर खड़ा मिले
बांसुरी का स्वर आप सबको ही लुभाएगा
पुल पर चढ़ते ही शहर दिखेगा भव्य
रोशनी तिरंगी देख पर्यटक हर्षायेगा
गन्ना गौहनिया अरु नकटादाना नौगमां
चौराहा बनकटी भी जन मन लुभायेगा
घूम लो उद्यान आप नेहरू का शहर में
पकड़ो सफारी सैर जंगल मन भाएगा

कैमरा

जिंदा हो अथवा हो अधमरा
सबके मतलब का है कैमरा
जिंदा लोगो के बनाता सुंदर फोटो
बड़ा, बूढा हो या फिर हो छोटू

खटका, शटर, लेंस सब गायब
तुझे मोबाइल में ले घूमते साहब
ड्रोन अवतार में तू उड़ने लगा
फिल्मकारों का तू सबसे सगा

टीवी चैनल अखबार हैं तेरे अधीन
तुझमें छुपा है गुप्तचरों का जीन
मीडिया का तू ही सच्चा मददगार
शादी पार्टियों से भी तुझे है प्यार

नव विवाहिता का घूंघट तू ही हटाये
सुंदरता अनुपम तू ही तो दिखाए
वाकई तू है बड़े काम की चीज
स्वाद नहीं तेरे कारनामे हैं लजीज

जमाने के साथ बदलता स्वरूप तेरा
हमें तो दिख रहा है नया सवेरा
आगे कैसा अवतार होगा तेरा
तब सबसे सुंदर फोटो लेगा मेरा

प्रकृति से प्यार

रहना सेहतमंद तो, करो प्रकृति से प्यार
वेलेंटाइन मानकर, जी भर करो दुलार
जी भर करो दुलार पेड़ मत काटो भाई
दया करो जीवों पर ताल न पाटो भाई
प्रकृति बनी भूमंडल का सुंदर सा गहना
वापस मिले अथाह प्यार तुम करते रहना

वेलेंटाइन वीक

आहें भरो न मित्रवर, कर दो आज प्रपोज
सबसे पहले दीजिये, प्रेयसि को एक रोज
प्रेयसि को एक रोज चॉकलेट हाथ थमाओ
प्रॉमिस करो-कराओ टेडी भी दिलवाओ
गले लगा किस करो पकड़ लो लव की राहें
लठ्ठबाज प्रेयसि परिजन तो भरिये आहें

टेडी डे

टेडी डे पर मिली थी, दिल की परतें खोल
रहा देखता तो लगी, वो मुझको अनमोल
वो मुझको अनमोल खिलाया चमन निराला
दुख आया पर सुख में था बदली कर डाला
काम कठिन कितना हो हर पल रहती रेडी
दया, लगन, ममता मूरति सी सुंदर टेडी

आप भी टेडी

टेडी सी दिखती रहूं, वेलेंटाइन वीक
पर पतिव्रत की सर्वदा, रहूं निभाती लीक
रहूं निभाती लीक यही ईश्वर से माँगूं
जीवन होवे सरल न कर्तव्यों से भागूं
आई थी जब साथ नहीं थे मेरे डैडी
अब तो मनभावन मुझको भी लगते टेडी

प्रॉमिस डे

अगर किनारा गंदा हो तो मौन तोड़ना होगा
प्रॉमिस डे पर कौल करो सब ढोंग छोड़ना होगा
मौनी अम्वावस आई है लाई सुखद सवेरा,
है अभियान स्वच्छता का जल तरफ मोड़ना होगा
यह भी प्रॉमिस करो मिटे यह भ्रष्टाचार निराला
पाक साफ सब रहे, आचरण रहे न बिल्कुल काला
घूसखोर सिर मौर बने हैं उन्हें मिटाना होगा
नाश नशा सबका काता है बिकती फिर क्यों हाला

किस-डे

'किस-डे' पर 'किस' को करूँ 'किस' दीजै बतलाय
कोरंटाइन वो हुई, दिल मेरा अकुलाय
दिल मेरा अकुलाय परीक्षा बहुत बड़ी है
कैसे 'किस' लूं हिम्मत कोसों दूर खड़ी है
डोज लगी ना अभी न आया मित्रों विश डे
आना अगली साल अभी गुम जाओ 'किस-डे'

बदलाव

जब से हुआ है ब्याह प्रेमीजन भरें आह
प्रेयसि को आजकल साजन ही सुहाता है
फोन ने बेहाल कर रखा है उसे अब तो
व्हाट्सऐप रात-रात भर तक जगाता है
मायके में जाती है तो करता काल वीडियो
जब देखो फोन पे ही अक्सर बतियाता है
प्रेमियों की काल-चैट सब बिसराइ दई
लगता है 'शक्की' पति रात दिन सताता है

महंगाई

आग लगी पेट्रोल में, होगा सौ के पार
टेक्सजीवी हो गई, अब अपनी सरकार
अब अपनी सरकार 'एक-कर' नारा दीन्हा
जीएसटी बिसराइ खजाना है भर लीन्हा
फिफ्टी से भी अधिक 'कर' जाओ ग्राहक जाग
वादा पूरा कराओ बुझ जाएगी आग

शिवनगरी

न्यारी तीनों लोक से, शिवनगरी है भ्रात
आया परिपूरन हुआ, गया न सो पछतात
गया न सो पछतात मोह माया से बचना
स्वर्ग द्वार हैं खुले न युक्ती कोई रचना
काशी दर्शन अमर मृत्यु भी लगती प्यारी
पीएम को भी भाई नगरी जग से न्यारी

आरक्षण

आरक्षण ने शूरमा, आहत किये अनेक
रहे कूदते दिए अब, घुटने सबने टेक
घुटने सबने टेक बहादुर मुरझाए हैं
पूछ रहे कहिए आरक्षण क्यों लाये हैं
कटुता बढ़ती कर भाईचारे का भक्षण
सब समान फिर क्यों लाये 'साहब' आरक्षण

बदलाव यह भी

रोज जगाते भोर ही, दिन भर लेते हाल
सोने तक का साथ है, अजब अनोखी चाल
अजब अनोखी चाल वोट को नेता डोलें
बदजुबान थे लेकिन अब मीठा ही बोलें
बीड़ी सिगरेट चाय मसाला दें शराब की डोज
वेलेंटाइन सा चुनाव अब 'रोज' दे रहे रोज

दुश्वारी

पिछड़ा ही लड़ पायेगा, पिछड़ी सीट जो होय
एससी होइ तो और सब, जाओ घर में सोय
जाओ घर में सोय इरादा बदलो अपना
खूब लड़ाओ खुद चुनाव को समझो सपना
अनआरक्षित सीट न होवे कोई लफड़ा
उसपर भी लड़ने आएंगे एससी पिछड़ा

मुफ्त में वोट

दिया किसी को कुछ नहीं, मगर माँगते वोट
हां करता है जो नहीं, वहीं जा रहे लोट
वहीं जा रहे लोट पैर बिल्कुल ना छोड़ें
जब तक हाँ में रुख अपना वोटर ना मोड़ें
कह 'अचूक' वो पतित चुनावी मजा न लिया
दे देगा वो जान वोट उसको ना दिया

कच्ची शराब

जब से गांवों में बढ़ा, है चुनाव का शोर
तब से कच्ची बन गई, है सबकी सिरमौर
है सबकी सिरमौर मचाया शोर निराला
ले कइयों की जान उन्हें बेदम कर डाला
कायम रखना होश विनय करता यह सब से
'कच्ची होती बात' उतरती कच्ची जब से

आरक्षण सूची

आई सूची जो नई, है जूतम पैजार
नए सूरमा समर में, दीन्हें सभी उतार
दीन्हें सभी उतार लड़ेंगे अब आपस में
टिकट मिला ना फंसे कई नेता कॉकस में
जाति हुई हिट जीतन की है सुधि बिसराई
'सबका साथ विकास' कहाँ जो सूची आई

वोटर भगवान

आया समय चुनाव का, वोटर है भगवान
प्रत्याशी कर परिक्रमा, बढ़ा रहे पहचान
बढ़ा रहे पहचान खिलाते और पिलाते
आसमान में जाति-पाँति अरु रिश्ते-नाते
सबको आशिष देकर वोटर ने भरमाया
कह 'अचूक' सच्चा सेवक बन क्यों ना आया

आधुनिक मतदाता

मतदाता को लग रहा, नेताओं सा रोग
कहते कुछ करते कछू, जो ना करने जोग
जो ना करने जोग झूठ की फसल उगाते
होगी पक्की जीत सभी को यही बताते
जिसके होता पास गीत उसके ही गाता
नेताओं सा 'चतुर' हो गया है मतदाता

झूठ का व्यापार

गांव गली में घूमते, झूठों के सरदार
वादे झूठे कर रहे, है झूठा व्यवहार
है झूठा व्यवहार हवा के महल बनाएं
पहले है बन चुका पुनः आवास बनाएं
पानी, सड़क, काम, शौचालय दे देंगे बेभाव
कागज नाव चलाते चेले 'साहब' के हर गांव

नामांकन

पर्चा दाखिल हो गया, चढ़ने लगा बुखार
चरण वंदना चरम पर, रात दिवस मनुहार
रात दिवस मनुहार खास वोटर का होना
खूब जुटाते भीड़ बहुत डर रहा कोरोना
दारू मुर्गे की दावत से बढ़ता खर्चा
कहें 'अचूक' बहुत महँगा पड़ता है पर्चा

मतदान

आया आज चुनाव है, करना है मतदान
पालो प्रोटोकॉल भी, रहे सुरक्षित जान
रहे सुरक्षित जान भाइयों बहुत जरूरी
वोटर हों या कर्मी सबसे रखना दूरी
अगर बचोगे तब ही हो पाए मन भाया
धोओ हाथ, मास्क अपनाओ संकट आया

जीत

जीत गए हैं आप सब, हार गया है देश
कोरोना की जीत से, तगड़ी पेशोपेश
तगड़ी पेशोपेश करें क्या भारतवासी
भरे हुए श्मशान गांव-घर घिरी उदासी
जीतो पहनो 'हार' तुम यह चुनाव की रीत
मन से सोचो किस तरह आप गए हो जीत

शुभकामनाएं

स्वीकारो शुभकामना, जीत गए हो आप
ऐसा कुछ कर लीजिए, चमको केवल आप
चमको केवल आप सभी करतब निर्वाहो
पस्त विरोधी, जनता कर दे वाहो–वाहो
जमकर करो विकास समस्या सारी टारो
रहिये मस्त 'अचूक' बधाई तुम स्वीकारो

पंचायतीराज दिवस

पंचायत के राज का, उदय हुआ था आज
सफल हुआ है किस तरह, कायम यह भी राज
कायम यह भी राज, मिले अधिकार न पूरे
नाली, गाली, मनरेगा, हटवाते घूरे
दे दो सब अधिकार, मिला है मुश्किल से मत
ऐसा सिस्टम बने सफल हों सब पंचायत

लॉकडाउन की शादी

मेरी शादी में बचे, हैं केवल दिन चार
पता नहीं इस समय में, क्या कर दे सरकार
क्या कर दे सरकार बड़ा है बहुत फजीता
ठंडा है सब जश्न हो गया विधि विपरीता
कह 'अचूक' कोविड ले आया विपति घनेरी
हितू-मित्र बिन कैसे होगी शादी मेरी

डाउनलॉक

आया डाउनलॉक फिर, चौराहे भी मस्त
खाली-खाली पड़े हैं, जो रहते थे व्यस्त
जो रहते थे व्यस्त, आज लगते हैं सूने
दहशत बैठाई दिल में है कोविड तूने
नए साल को भी कोविड 19 है भाया
शायद इसीलिए 'कर्फ्यू' फिर से ले आया

सन्नाटा

डाउनलॉकी दौर में, सन्नाटे का राज
लोग घरों में कैद हैं, सड़कें सूनीं आज
सड़कें सूनीं आज राज कोविड का जारी
दौर पुराना नजर आ रहा मुश्किल भारी
तोड़ा प्रोटोकाल मृत्यु ने डेहरी झाँकी
सुधरो! कहें 'अचूक' दौर यह डाउनलॉकी

फैशन

जीना तो अपनाइए, मित्रों अब नव टास्क
फैशन में शामिल करो, जीवन रक्षक मास्क
जीवन रक्षक मास्क लगाओ बहुत जरूरी
जीना अगर जरूरी तो मास्क मजबूरी
तभी लगेगा भइया 56 इंची सीना
ढको मास्क से मुँह यदि आवश्यक है जीना

मानवता भी लुप्त

आज सभ्यता मर गई, कोरोना के काल
जीना मुश्किल हो रहा, मरना भी बेहाल
मरना भी बेहाल न कंधा देता कोई
अर्थी सूनी मानवता ज्यों मरकर रोई
शव गाड़ी, सिर, साइकिल लादत जरा न लाज
मानवता भी मर गई इस कोविड में आज

बढ़ता प्रकोप

कोरोना का बढ़ रहा, मित्रों बहुत प्रकोप
पलक झपकते हो रहे, मनुज अचानक लोप
मनुज अचानक लोप बचें ना पंडित-काजी
पत्रकार, एमएलए रुखसत ज्ञानी 'हाजी'
अपनों से अपनों की बिछुड़न देती रोना
करिये काह 'अचूक' बना दुश्मन कोरोना

मौत की छाया

कैसे हम सब जी सकें, नाच रही है मौत
व्याधि अनोखी आ गई, बन जीवन की सौत
बन जीवन की सौत साँस खतरे में आई
'प्राणवायु' कम हुई बेड ना मिले दवाई
जल बिन मछली मरे मर रहे हैं सब ऐसे
बतलाओ प्रभु जीवन हो धरती पर कैसे

नमामि गंगे

गंगा मैया की पावनता, नष्ट हो रही मित्र
शव उतराते मिल रहे, कई जगह से चित्र
कई जगह से चित्र गंदगी फैली भारी
हुई 'नमामी' फेल नियत गुम गई तुम्हारी
आई ऐसी व्याधि मच रही हइया दइया
होती कितनीं मौत बतातीं गंगा मैया

लॉकडाउन की दूसरी लहर के हालात

कोरोना से रुकतीं साँसें अब अच्छे इंसान की
कमी हुई अपने भारत में धरती के भगवान की
टिकट काटती प्राणवायु है अब सीधे श्मशान की
जय जयकार बढ़ी भारत में अब अपने भगवान की

कोरोना का कहर दूसरा आया बनकर काल
स्वांस तंत्र में दस्तक देकर करता है बेहाल
ऐसा लगता उमर घट गई अब मित्रों इंसान की
जय जयकार बढ़ी भारत में अब अपने भगवान की

पिछली बार कोरोना लाया केवल बंदर घुड़की
लेकिन अबकी दहशत भारी सारी जनता हुड़की
पल में रुकने लगी सांस अच्छे खासे इंसान की
जय जयकार बढ़ी भारत में अब अपने भगवान की

अस्पताल में बेड नहीं हैं बँटीलेटर गायब
खत्म आक्सीजन बतलाते रोइ डॉक्टर साहब
सारी पट्टी पोल खुल गई दवा, हवा सामान की
जय जयकार बढ़ी भारत में अब अपने भगवान की

भरे हुए श्मशान सभी हैं इंतजार में लाशें
चीख रहा हर कोई कहता काफी महंगी साँसें
गर्व गुम गया है मानव का कीमत समझी जान की
जय जयकार बढ़ी भारत में अब अपने भगवान की

बीस लाख में बेड की बोली कैसे जिये गरीब
लाखों में बिक रहा सिलेंडर मिलता नहीं करीब
पैसा सोर्स काम न आये दुर्गति है इंसान की
जय जयकार बढ़ी भारत में अब अपने भगवान की

एम्बुलेंस बहुत महँगी है आसमान में लकड़ी
अस्पताल में घुसी दलाली कफन की चोरी पकड़ी
नकली इंजेक्शन भी बिकते ब्लेकिंग हर सामान की
जय जयकार बढ़ी भारत में अब अपने भगवान की

आया डाउनलॉक दुबारा चौतरफा बर्बादी
मार्केट सब बंद पड़ा है कैसे होवे शादी
दान, दहेज कहाँ से लाएं दम घुटती अरमान की
जय जयकार बढ़ी भारत में अब अपने भगवान की

अर्थव्यवस्था चौपट सारी है मुश्किल में शासन
मदद पुरानी गायब सारी आया सूखा राशन
रुपया, दाल नहीं मजदूरी पूड़ी भी गुम दान की
जय जयकार बढ़ी भारत में अब अपने भगवान की

प्राणवायु कैसे पहुँचे यह मुश्किल थी बलशाली
ऑक्सीजन की ट्रेन चलाकर युक्ती नेक निकाली
सेना, वायुयान ला रहे साँसें जो इंसान की
जय जयकार बढ़ी भारत में अब अपने भगवान की

कोर्ट में सरकार खड़ी है रोज पड़ रही पेशी
देख आपदा भारी हम पर करते मदद विदेशी
हाथ मदद को बढ़ा रहा शुभ मंशा पाकिस्तान की
जय जयकार बढ़ी भारत में अब अपने भगवान की

मददगार, हमदर्द, हितैषी कोरोना के मारे
दहशत भारी, कैद घरों में नहीं निकलते द्वारे
भूल गए जनता को केवल चिंता अपनी जान की
जय जयकार बढ़ी भारत में अब अपने भगवान की

दौर चुनावी तो कोरोना लगता भीगी बिल्ली
नेता थे रैली जुलूस में मौन रही थी दिल्ली
खिल्ली खूब उड़ाई मिलकर जानकार के ज्ञान की
जय जयकार बढ़ी भारत में अब अपने भगवान की

मंत्री अफसर हुए पॉजिटिव साँसत में सरकार
कई विधायक पत्रकार भी गए जिंदगी हार
'बाबा' फिर भी घूम रहे हैं सुधि लेते इंसान की
जय जयकार बढ़ी भारत में अब अपने भगवान की

प्राणवायु की लूट मची है जारी है मनमानी
सिख संगत ने मुफ्त बाँटकर लिख दी नई कहानी
ऑक्सीजन के लंगर साँसें लौटाते इंसान की
जय जयकार बढ़ी भारत में अब अपने भगवान की

जिनको कहा जमाती नफरतवादी और नकारा
वे ही आग चिता को देकर बनते आज सहारा
अच्छे बुरे सभी धर्मों में मुश्किल है पहचान की
जय जयकार बढ़ी भारत में अब अपने भगवान की

नर्स, डॉक्टर, पत्रकार या पुलिस और अधिकारी
कोविड से लोहा लेते हैं युद्ध निरंतर जारी
आओ जय जयकार करो सब धरती के भगवान की
जय जयकार बढ़ी भारत में अब अपने भगवान की

नहीं दोष औरों को देना लड़नी स्वयं लड़ाई
काढ़ा, चूरन, चटनी समझो सबसे अहम दवाई
योग निरोग करेगा सबको हिकमत हिंदुस्तान की
जय जयकार बढ़ी भारत में अब अपने भगवान की

हाथ मिलाना नहीं किसी से, कुछ भी हो मजबूरी
शादी और पार्टी सबसे आप बना लो दूरी
हस्त प्रक्षालन और स्वच्छता बातें सच्चे ज्ञान की
जय जयकार बढ़ी भारत में अब अपने भगवान की

कोविड का टीका लगवाओ, करो मास्क से प्यार
सामाजिक दूरी हो पूरी छोड़ों मत घर द्वार
पालो डाउनलॉक यही विधि नाशक है शैतान की
जय जयकार बढ़ी भारत में अब अपने भगवान की

भूल गए हैं बल 'बजरंगी' उनको याद दिलाना
नहीं संजीवनि 'प्राणवायु' के पर्वत आप मँगाना
कष्ट हरेंगे! करो प्रार्थना अंजनि सुत हनुमान की
जय जयकार बढ़ी भारत में अब अपने भगवान की

कोरोना से रुकतीं साँसें अब अच्छे इंसान की
जय जयकार बढ़ी भारत में अब अपने भगवान की

निधि वन

निधि वन में श्रीकृष्ण जू खूब रचायो रास
बंसी स्वर से गोपिका आतीं प्रभु के पास
आतीं प्रभु के पास गलिन मँह सुख रहता है
सुख की चाहत भटको इनमें कवि कहता है
निधि वन देखो लेकर अपने सारे परिजन
कहें 'अचूक' प्रेम बरसा करता है निधि वन

लॉकडाउन काल की दुल्हन की व्यथा

कैसे बन पाऊँ मैं आपकी हमसफर होती
दुश्वारियाँ अब जरा भी न कम
लॉकडाउन ने अरमान रुसवा किये
अब बताओ पिया कैसे मिल पाएं हम

बंद बाजार ऐसा लगातार है
लगता सन्नाटे से इसको भी प्यार है
मुँह खुला पड़ती फौरन ही फटकार है
शोख बाजार था आज बेजार है

लेके डंडे पुलिस आ रही है वहीं
जिस दुकां पर जरा सा भी जाते हैं जम
लॉकडाउन ने अरमान रुसवा किये
अब बताओ पिया कैसे मिल पाएँ हम

लाख सपने बुने थे गए टूट सब
आँख अब बंद हैं दीखता सिर्फ रब
लौट पाएगा मंजर गुलिस्ताने कब
जाएगी कब बबा स्वस्थ हो पाएँ सब

जो थे हमदर्द गायब हुए हैं सभी
अब बताओ किसे हम सुना पाएँ गम
लॉकडाउन ने अरमान रुसवा किये अब
बताओ पिया कैसे मिल पाएँ हम

कपड़ा, जेवर या बर्तन नहीं मिल रहे
घाव गहरे हुए अब नहीं सिल रहे
जो मिला उसके भी चौगुने बिल रहे
अब तो ब्लेकिंग के मसले नहीं झिल रहे

सेण्ट-सिंगार मेरा मिला ही नहीं फिर
बताओ कहाँ से ये आती है रम
लॉकडाउन ने अरमान रुसवा किये
अब बताओ पिया कैसे मिल पाएं हम

शादी पक्की हमारी हुई है जभी
कोरंटाइन घरों में हैं अपने सभी
बाँध लेते हैं मुँह जाते मिल जो कभी
दूरियाँ भी बनाने लगे हैं सभी

रिश्ते भी संक्रमित हो गए आजकल एक
दूजे को समझें बहुत भारी बम
लॉकडाउन ने अरमान रुसवा किये
अब बताओ पिया कैसे मिल पाएं हम

मन में मेहमानबाजी का अरमान था
खाने पीने का भरपूर सामान था
नाश्ता खाना पूड़ी भी बेजान था
सूखा पत्ता हुआ शान जो पान था

लेके डंडे पुलिस हर तरफ है खड़ी
क्या करूँ जो बला थोड़ी हो जाए कम
लॉकडाउन ने अरमान रुसवा किये
अब बताओ पिया कैसे मिल पाएँ हम

झेल दुश्वारियाँ आ गई तेरे घर
देह तपती चढ़ा है बहुत तेज ज्वर
खुश्क खाँसी से मन में घुसा भारी डर
बोलो ऐसे में कैसे छुऊँ मैं अधर

रात पहली में ही दूरियाँ बढ़ गईं
वायरस कर गया है मुझे बेधरम
लॉकडाउन ने अरमान रुसवा किये
अब बताओ पिया कैसे मिल पाएं हम

कैसे बन पाऊँ मैं आपकी हमसफर
होती दुश्वारियाँ अब जरा भी न कम
लॉकडाउन ने अरमान रुसवा किये
अब बताओ पिया कैसे मिल पाएं हम

काल का बबाल

कोरोना के काल में, करता 'काल' बबाल
अपनों से बतिआइये, लेते रहिये हाल
लेते रहिये हाल, इम्युनिटी बढ़ जाएगी
निश्चित मानों कोविड की जड़-सड़ जाएगी
सुख बांटो, दुख पूछ लो, तोड़ो सब जंजाल
व्यस्त, मस्त बनकर रहो कोरोना के काल।

भाई दिवस

भाए भाई को सदा, प्रेम, मिलन, व्यवहार
तब ही तो यह दिवस भी, हो पाए साकार
हो पाए साकार रहे ना बिल्कुल दूरी
है कोविड का दौर मगर संग बहुत जरूरी
कहें 'अचूक' एक ही माँ के हम सब जाए
राम-भरत सा प्रेम बहुत 'लक्ष्मण' भी भाए

व्हाट्सऐप के लिए

अगर गया तू साथ छोड़कर,
कैसे हम सब जी पाएँगे
कैसे मैसेज सब जाएँगे,
चैन ग्रुपों की सी पाएंगे

कैसे होगी काल वीडियो,
जहर किस तरह पी पाएँगे
बहुत चहेता व्हाट्सऐप तू
तेरे बिन कब जी पाएँगे

लक्ष्मी का वाहक बन बैठा
लेनदेन ना कर पाएँगे
समय पास के लिए बताओ
हम सब किसके दर जायेंगे

छुट्टी तू ही दिलवाता है
खबरें सारी ले आता है
चिट्ठी का भी फर्ज निभाता
प्रेम संदेशा ले आता है

रिश्तों में दूरियाँ बढ़ाईं
लेकिन मित्र बनाता है
निजता नीति भूल जा तू
अगर सभी से नाता है

किसानों के सवाल

चुना आपको जनता ने ही, करते हो मन भाया क्यों?
जब किसान को नहीं चाहिए, फिर कानून बनाया क्यों?
माँग, आंदोलन जारी है, सब विरोध बिसराया क्यों?
दुखी किसानों की सुनने में है 6 माह लगाया क्यों?
सुनो किसानों! हठयोगी ये कभी न बिल वापस लेंगे,
फिर बतलाओ तुम सबने है, 'काला दिवस' मनाया क्यों?

मीडिया पर कोविड प्रभाव

कोविड ने हमको सताया बहुत है,
मगर हमने अब तक बताया नहीं है

ये कोविड ने हमको रुलाया है कैसा
गई नौकरी भी, घटाया है पैसा
न फोटो का बिल है, न पेट्रोल जोड़ा
वो सब बंद है मिल रहा था जो थोड़ा

जो खर्चा था जायज नहीं मिल सका है,
उसे अबकी बिल में लगाया नहीं है
कोविड ने हमको सताया बहुत है,
मगर हमने अब तक बताया नहीं है

जो दफ्तर था उस पर लगे कब से ताले
सभी काम हैं अब घरों के हवाले
घर पर ही आ जाते विज्ञप्ति वाले
बिजली का बिल भी कहाँ से निकालें

खर्चा बढा घर का बढ़ता गया है,
अभी एक धेला भी पाया नहीं है
कोविड ने हमको सताया बहुत है,
मगर हमने अब तक बताया नहीं है

है वेतन अधूरा, करो काम सारा
न हो पाए चढ़ जाता साहब का पारा
कवरेज कहाँ हो डटा है कोरोना
बहुत डाँट मिलती कवर जो करो ना

खबरें भी खाने लगा है कोरोना
समस्या कई जिनको गाया नहीं है
कोविड ने हमको सताया बहुत है
मगर हमने अब तक बताया नहीं है

विजनेस सभी बंद कर्फ्यू हवाले
कहो ऐड कैसे कहाँ से निकालें
है पैसा फँसा और इनकार जारी
विज्ञापनों पर अढ़ैया सवारी

हैं लक्ष्यों में उलझे निकल कैसे पाएँ
गई नौकरी ऐड लाया नहीं है
कोविड ने हमको सताया बहुत है
मगर हमने अब तक बताया नहीं है

मिली मौत हमको तो औरों से बढ़ कर
बीमारियों ने भी रक्खा जकड़कर
तवज्जो हितैषी न दे पाये हमको
मदद इतनी कम ना घटा पाई गम को

पैकेज मिला ना गया साल पूरा
टीका समय से लगाया नहीं है
कोविड ने हमको सताया बहुत है
मगर हमने अब तक बताया नहीं है

पुलिस डॉक्टर सब कोरोना के योद्धा
मगर हमको कुछ ना समझते पुरोधा
कोविड से मरने पे ना हाल लेते
हवा गुम दवा, बेड हमको ना देते

बीमारियां झेलते खुद सभी हैं
दवा के सिवा कुछ भी खाया नहीं है
कोविड ने हमको सताया बहुत है
मगर हमने अब तक बताया नहीं है

अखबार ने अपनी कीमत बढ़ाई
एजेंट की पर बढ़ी ना कमाई
ग्राहक घटे रोता हॉकर बेचारा
पढ़ने से डरने लगा देश सारा

प्रेसें बहुत बंद अब तक हुईं हैं
मालिक कहें माल आया नहीं है
कोविड ने हमको सताया बहुत है
मगर हमने अब तक बताया नहीं है

हूँ अखबार वाला, है कोविड से पाला
मुलाजिम सभी थे गया है निकाला
जो अखबार को बेंच पाये नहीं
दुकानें चलाते वो आये नहीं

घरों में है जनता मगर भटकते हम
कोरोना ने क्यों कर डराया नहीं है
कोविड ने हमको सताया बहुत है,
मगर हमने अब तक बताया नहीं है

बढ़ता ही जाता ये कुनवा हमारा
तभी मान सम्मान घटता हमारा
अनपढ़ पकड़ माइक हैं सबसे आगे
कांफ्रेंस चरवाहों सा झुंड लागे

फंगस सी है ब्लैकमेलिंग निराली,
बताओ वो जिसको फँसाया नहीं है
कोविड ने हमको सताया बहुत है,
मगर हमने अब तक बताया नहीं है

बिकने की बीमारी कोविड से भारी
मालिक का आर्डर खबर सेट हमारी
जीएम जो बैठा वो बिल्कुल अनाड़ी
पड़ा बंद टीवी है एंकर जुगाड़ी

नजर चौथे स्तंभ को लग गई है
ताबीज भी बनवाया नहीं है
कोविड ने हमको सताया बहुत है
मगर हमने अब तक बताया नहीं है

अखबार टीवी पे कोविड की छाया
दिलासा न दे पाये है डर बढ़ाया
दिवस लेके आया है दुश्वारी भारी
लाशों के अंबार बीमारी जारी

समझ रहे हमको अछूत सब
टेस्ट भी अब तक कराया नहीं है
कोविड ने हमको सताया बहुत है
मगर हमने अब तक बताया नहीं है

कर्मी को मालिक ने बिल्कुल भुलाया
रहते रहे घर में फाँका लगाया
ले ली खबर पर न रुपया दिलाया
फिर भी न दुख हमने अपना बताया

हित के जो आयोग तुमने बनाए
उनको भी लागू कराया नहीं है
कोविड ने हमको सताया बहुत है
मगर हमने अब तक बताया नहीं है

टीकाकरण

टीका लगवाओ सभी, हो न जरा सी देर
टीका लगते बनोगे, आप अनोखे शेर
आप अनोखे शेर व्याधि से लड़ पाओगे
जीते जाओ भजन प्रभू जी के गाओगे
स्वस्थ रहो जीवन हो जाये सबका नीका
युवा वर्ग को शुरू हो गया लगना टीका

पौधारोपण

आय बढ़ेगी मुफ्त में, रहे सुरक्षित मेड़
खेतों के चारो तरफ, आप लगाओ पेड़
आप लगाओ पेड़ यही 'साहब' का सपना
फिर से पड़े न मंत्र ऑक्सीजन का जपना
प्रमुदित होगी खुद धरा अम्बर भी हर्षाय
पेड़ फलों के रोपिये खूब बढ़ेगी आय

अनमोल जिंदगी

छोड़ो घोर निराशा इसकी छाया बिल्कुल काली
है अनमोल जिंदगी काफी खुशियाँ देने वाली

माना मुश्किल-दुश्वारी ने तेरे मन को घेरा
दिल दिमाग के अंदर डाला अवसादों ने डेरा
खत्म नहीं होती दिखती जो रजनी बिल्कुल काली
है अनमोल जिंदगी काफी खुशियाँ देने वाली

मन को करुणा से भर लेना देता घोर निराशा
पलक झपकते जीवन पथ पर छाता अजब कुहासा
जीवन से मुँह मोड़ रहे हैं कायर से भूचाली
है अनमोल जिंदगी काफी खुशियाँ देने वाली

सुख-दुख गाड़ी के दो पहिये चलते आगे पीछे
एक चल रहा आगे लेकिन दूजा पीछे खींचे
दोनों का बैलेंस बनाती पटरी ट्रेन निराली
है अनमोल जिंदगी काफी खुशियाँ देने वाली

माना दगा मिला होगा है मतलब का संसार
क्रेडिट कार्ड जेब पर निर्भर हुआ आजकल प्यार
बढ़ते रहो मुसीबत से लड़ कहती तरु की डाली
है अनमोल जिंदगी काफी खुशियाँ देने वाली

फूलों का संसार निराला गंधमुक्त अब फूल
देते हैं सुगंध थोड़ी फिर जाते सब कुछ भूल
नहीं लोभ में पड़ना इनकी टेसू जैसी लाली
है अनमोल जिंदगी काफी खुशियाँ देने वाली

बात बात में रूठ रहे हो यही दुखों का कारण
आती है दुश्वारी भारी होता सहज निवारण
पहले ही निपटा डालो जो मुश्किल आने वाली
है अनमोल जिंदगी काफी खुशियाँ देने वाली

मेहनत करके बसा लिया है खुशियों का संसार
सोंचो आप बिना कैसे जी पायेगा परिवार
बिन पतवार डूब जाती है नौका रंगत वाली
है अनमोल जिंदगी काफी खुशियाँ देने वाली

कोविड ने भी कर डाले हैं मानुष के मन काले
इसीलिए करने आये हैं खुद को मौत हवाले
होगा खतम वायरस भी क्यों चिंता मन में पाली
है अनमोल जिंदगी काफी खुशियाँ देने वाली

ईश्वर का उपहार जिंदगी रखना इसे सम्हाल
मानव तन अनमोल मिलाते रहो स्वरों से ताल
जीवन खतरे तक ले जाना है ख्याल जंजाली
है अनमोल जिंदगी काफी खुशियाँ देने वाली
छोड़ो घोर निराशा इसकी छाया बिल्कुल काली

पीलीभीत का पर्यटन गीत

चूका पिकनिक और बाइफरकेशन सबको भाता
पीटीआर स्वागत करता है पीलीभीत बुलाता

गोमति मइया का उद्गम है, यशवन्तरि माँ द्वारा
गौरीशंकर, सिद्धदेव हैं, पतशाही गुरुद्वारा
सेल्हा, जामा मस्जिद जिनका सब धर्मों से नाता
पीटीआर स्वागत करता है पीलीभीत बुलाता

सींच रहीं जंगल को नहरें और साइफन न्यारा
मस्त बाइफरकेशन नहरों का है जक्शन प्यारा
कल कल स्वर में बहता पानी मन मोहित हो जाता
पीटीआर स्वागत करता है पीलीभीत बुलाता

नानकमत्ता, पूर्णागिरि का पीलीभीत से नाता
वेणु सुता गूँगा देवी का सुयश जमाना गाता
नाथ इकोत्तर, घाट त्रिवेणी जनता के मन भाता
पीटीआर स्वागत करता है पीलीभीत बुलाता

देवहा और शारदा नदियाँ, शान शारदा सागर
जंगल की वादियाँ मनोरम, प्राणवायु का आगर
जो भी आता यहाँ घूमने गीत यहीं के गाता
पीटीआर स्वागत करता है पीलीभीत बुलाता

चारो तरफ द्वार स्वागत के, है नेहरू उद्यान
सुंदर सब चौराहे देते हैं बेहतर पहचान
एक जिला उत्पाद बाँसुरी, स्वर दुनिया को भाता
पीटीआर स्वागत करता है पीलीभीत बुलाता

चक्र तीर्थ, लिलहर का मेला, इलाबाँस भी खास
आल्हा-ऊदल गुरू झिलमिला की कुटिया है पास
पीताम्बरा, बराही, काली दर जयघोष सुनाता
पीटीआर स्वागत करता है पीलीभीत बुलाता

गाय-गोमती से परिपूरन पीलीभीत हमारा
मोरजध्वज का किला मरौरी जगह-जगह गुरुद्वारा
ओवरब्रिज हो गया तिरंगा देश प्रेम बरसाता
पीटीआर स्वागत करता है पीलीभीत बुलाता

भुगनइ ताल डेढ़ सौ एकड़, मठा ताल भी प्यारा
लिंग थापे तट देवराज ने तभी गोमती तारा
दुर्गानाथ भगीरथ जैसा धार गोमती लाता
पीटीआर स्वागत करता है पीलीभीत बुलाता

जल-जंगल अरु वन्य जीव हैं जनपद के गल हार
बाघ, हिरन, बारहसिंघा के दर्शन हों हर बार
दृश्य मनोरम सुंदरता से पीलीभीत का नाता
पीटीआर स्वागत करता है पीलीभीत बुलाता

सप्त सरोवर की सुंदरता सबको खूब लुभाती
पक्षी सुंदर बहुत प्रवासी आते कन्नड़ हाथी
जड़ी-बूटियां, सब्जी फल जंगल हमको दे जाता
पीटीआर स्वागत करता है पीलीभीत बुलाता

चूका पिकनिक ने दे दी है हमें नई पहचान
वाटर, ट्री, थारू हट सुंदर खूब बढ़ातीं शान
गोवा जैसा बीच अनोखा, लोरी डैम सुनाता
पीटीआर स्वागत करता है पीलीभीत बुलाता

सीमा अपनी जुड़ी हुई है पास देश नेपाल
यूके बना हुआ है प्रहरी देवभूमि खुशहाल
शुक्ला फॉटा, दुधवा, जिम से पीटीआर का नाता
पीटीआर स्वागत करता है पीलीभीत बुलाता

जंगल के गेस्ट हाउस भी बने हुए पहचान
माला, नवदिया और बराही वाद मुस्तफा शान
नहरों के जक्शन पर रहना मन उल्लास जगाता
पीटीआर स्वागत करता है पीलीभीत बुलाता

फार्म हाउस भी हैं सुंदर रुकने की है सुविधा
रहन सहन पंजाबी भोजन दूर कर रहा दुविधा
मस्त तराई है मनमोहक गीत जमाना गाता
पीटीआर स्वागत करता है पीलीभीत बुलाता

मैनाकोट गाँव में 'मैना देवी' का स्थान
'ओड़ाझार' और 'सतभैया बाबा' हुए महान
बाबा 'त्रेतानाथ' की कीरति सभी जमाना गाता
पीटीआर स्वागत करता है पीलीभीत बुलाता

'राजपाल यादव' मन भाई सुंदरता अनमोल
फिल्म सिटी बनवाने को वे बोल रहे दिल खोल
जल-जंगल प्राकृतिक नजारा दावा ठीक बताता
पीटीआर स्वागत करता है पीलीभीत बुलाता

एम पी वरुण गांधी के मन में विकास के सपने
जल जंगल पर्यटन सभी विकसित हो जाएं अपने
नेता अफसर व्यापारी भी गीत यहाँ के गाता
पीटीआर स्वागत करता है पीलीभीत बुलाता

डीएम पुलकित खरे यहाँ के रचते नव इतिहास
इसीलिए उम्मीद सभी को जिला बनेगा खास
आओ सुंदरता से मिल लो तुम्हें 'सतीश' बुलाता
पीटीआर स्वागत करता है पीलीभीत बुलाता

चूका पिकनिक और बाइफरकेशन सबको भाता
पीटीआर स्वागत करता है पीलीभीत बुलाता

वीर महाराणा प्रताप जी

वीर पुरुष आप सा और कोई दिखा नहीं
शत्रु वाली सेना पल भर में अकुलाई थी
स्वीकारी आधीनता मुगलों की नहीं कभी
स्वच्छन्द रहे थे आप वीरता दिखलाई थी
लाखों की सेना से लड़े थे मन भर के लड़े
चेतक ने साथ दिया वीरता दिखलाई थी
अन्न युद्ध बीच खत्म हो गया अचानक तो
घास वाली रोटियां वो हँस-हँस के खाईं थीं

पंडित रामप्रसाद बिस्मिल जी

पंडित जी 'बिस्मिल' स्वतंत्रता के वाहक थे,
काकोरी की घटना से गोरे भी हिलाए थे
वंशज परशुराम शाहपुर में है धाम,
वीरता कथानक भी भारती को भाए थे
पुस्तकें लिखीं थीं और बेंची आय कुछ हुई तो
'अज्ञात' क्रय कर हथियार लाए थे
'सरफरोशी की तमन्ना' दिलों में जगाई और
लक्ष-लक्ष युवकों को 'राम' जी रुलाये थे

बर्षारानी

आता मानसून तभी आती झूम-झूम और
कृषि हेतु आप वरदान बन जाती हो
पशु पक्षी हर पल आप को बुलाते और
बूंद स्वाति बनके पपीहा मन भाती हो
प्रेमी युगलों की वाणी गीत आपके ही गाती
रिमझिम जैसी फुहार बन कर आती हो
करते विलाप अति वृष्टि रौद्र रूप देख
बाढ़ बन तबाही सारे जग मध्य लाती हो

युवक टीकाकरण

आगे आओ नवयुवक, लगवा डालो डोज
टीका लगवाते सभी, खिंचवाओ निज पोज
खिंचवाओ निज पोज वायरल करते जाओ
टीका लगवाने का संशय हरते जाओ
कहें 'अचूक' वायरस इस टीके से भागे
इसीलिए टीका लगवाने आओ आगे

बरसाना धाम

कुंज गलिन में घूम लो, मिल जाएगी प्रीत
दर्शन पूजन से मिले, जीवनपथ पर जीत
जीवन पथ पर जीत दिलाएं राधारानी
बरसाने में गूंज रही है अमृत वानी
ब्रज में आओ आप भटक लो कुंज गलिन में
राधे राधे नाम जपो सब कुंज गलिन में

गिरिराज जी

करो परिक्रमा आइ के, मित्रों सब गिरि राज
प्रभु प्रसन्न हो जाएंगे, करें सुखों का साज
करें सुखों का साज बदल जाएगी किस्मत
आ जाओ प्रतिमाह भिड़ाओ ऐसी हिकमत
बच्चे बूढ़े दौड़ते नंगे पग हरषाइ
कृपा करेंगे कृष्ण जू करो परिक्रमा आइ

आकाशवाणी

मिश्री सी घोली वाणी में सोते को सदा जगाया है
सतयुग से कलियुग तक इसका मधुरिम स्वर सबको भाया है

सृष्टि नहीं थी तब ब्रम्हा ने वाणी सुनी अनोखी
'तप ही है आधार सृष्टि का' फिर रचना क्यों रोकी
आये विष्णु ब्रम्ह ने सृष्टी का विधान अपनाया है
मिश्री सी घोली वाणी में सोते को सदा जगाया है

सतयुग द्वापर त्रेता में 'वाणी' देवों की भाषा
कलियुग में भी जाग्रत करती रचती नव परिभाषा
सृष्टि हेतु मनु सतरूपा को प्रभु ने स्वयं जगाया है
मिश्री सी घोली वाणी में सोते को सदा जगाया है

कथा सत्यनारायण जी की व्रत प्रभु का विसराया
नभवाणी सुन कलावती ने व्रत फिर से करवाया
धन धान्य से भरी नाव ले वापस वाणिक आया है
मिश्री सी घोली वाणी में सोते को सदा जगाया है

कपट मुनी ने भानु रसोई मांस जभी पकवाया
नभवाणी ने धरम भ्रष्ट होने से तभी बचाया
कपट मुनी, परताप भानु को राक्षस तभी बनाया है
मिश्री सी घोली वाणी में सोते को सदा जगाया है

गुरुवर का अपमान किया जब मानस में अज्ञानी
मंदिर में तब गूंज उठी भोले शंकर की वानी
देकर अजगर योनि शिष्य को अच्छा सबक सिखाया है
मिश्री सी घोली वाणी में सोते को सदा जगाया है

'पुत्र आठवां काल बनेगा' थी यह नभ की वाणी
'जन्म ले चुका कंस काल' यह भी गूंजी थी वाणी
जागा कंस मगर जीते जी माया में भरमाया है
मिश्री सी घोली वाणी में सोते को सदा जगाया है

कलियुग में कल की लीला है खुले केंद्र अलबेले
बोल रहे नभ की वाणी से शहद स्वरों में घोले
बहनें सुनतीं घर की बातें गाना भी मन भाया है
मिश्री सी घोली वाणी में सोते को सदा जगाया है

खेल जगत खेती की बातें बतलाते हैं भाव
भाषा ऐसी बोल रहे हैं मोहित होते गांव
युववाणी, शिक्षा की बातें और हुनर भी भाया है
मिश्री सी घोली वाणी में सोते को सदा जगाया है

खबरों का बाजार कषैला पर मीठी नभवाणी
जहर बेचती दुनिया लेकिन गुड बांटे नभवाणी
पाक साफ है जग को दर्पण सच्चा ही दिखलाया है
मिश्री सी घोली वाणी में सोते को सदा जगाया है

समाचार सच से परिपूरण पक्षपात से दूर
रोजगार की राह दिखाते ज्ञान बहुत भरपूर
टीकाकरण, पोलियो, खसरा खतरा सभी भगाया है
मिश्री सी घोली वाणी में सोते को सदा जगाया है

खबरों की दुनिया का मित्रों साधन सहज सुरीला
गाँव-गली बॉर्डर तक गूंजे मौसम, बादल नीला
सेल भी सस्ता सुनते जाओ कर भी नहीं लगाया है
मिश्री सी घोली वाणी में सोते को सदा जगाया है

सरकारी योजना बताती दुनिया को नभवानी
जो विकास होता है उसकी गाती सफल कहानी
खोया-पाया, कविताएं, मानस का पाठ पढ़ाया है
मिश्री सी घोली वाणी में सोते को सदा जगाया है

सीमा पर जवान अपने कुछ अवसादों के मारे
नभवाणी से मिलता सम्बल गानों संग चटकारे
इसीलिए रेडियो साथ में गन के ही लटकाया है
मिश्री सी घोली वाणी में सोते को सदा जगाया है

'मोदी जी' ने नभवाणी को दे दी नव पहचान
'मन की बात' रेडियो पर कर खूब बढ़ाई शान
सुनना नहीं चाहते थे जो उनके भी मन भाया है
मिश्री सी घोली वाणी में सोते को सदा जगाया है

एफएम ने भी खूब बढ़ाई नभवाणी की शान
कार, घरों, वाहन में गूंजे सुंदर मधुरिम गान
सभी जिलों तक कवरेज आने से जन जन हर्षाया है
मिश्री सी घोली वाणी में सोते को सदा जगाया है

नहीं रेडियो, तब सुन पाएं किस प्रकार नभवाणी
मोबाइल में ऐप लोड करके सुनिये नभवाणी
संदेशा नभवाणी का अब ट्वीटर भी ले आया है
मिश्री सी घोली वाणी में सोते को सदा जगाया है

'चेहरे की किताब' लाती नभवाणी का संदेशा
इंस्ट्राग्राम और यूट्यूबी है 'सजीव' संदेशा
'डिजिटल' होकर बदल गया अब नई रोशनी लाया है
मिश्री सी घोली वाणी में सोते को सदा जगाया है

सतयुग से इस युग तक देखो सच्चाई ही गाई
नहीं झूठ सनसनीखेज की खबरें कभी सुनाईं
जीत लिया विश्वास तभी श्रोताओं के मन भाया है
मिश्री सी घोली वाणी में सोते को सदा जगाया है

मिश्री सी घोली वाणी में सोते को सदा जगाया है
सतयुग से कलियुग तक इसका मधुरिम स्वर सबको भाया है

पिता

परमपिता से बढ़कर जिसने मुझको सदा सम्हाला है
पिता श्रेष्ठ है इस दुनिया में जीवन देने वाला है

जन्म दिया है रूप रंग दे जिसने हमें सजाया
गोद उठाया पकड़ उंगलियां चलना हमें सिखाया
शिक्षा दीक्षा ज्ञान सभी दे हमको मन से पाला है
पिता श्रेष्ठ है इस दुनिया में जीवन देने वाला है

कठिन समय जब भी आया मुश्किल ने मुझको घेरा
खड़ा मिला पीछे वो हर पल कांधा पकड़े मेरा
मुश्किल होंगी उन्हें मगर नाजों से मुझको पाला है
पिता श्रेष्ठ है इस दुनिया में जीवन देने वाला है

मंजिल पाकर आगे बढ़ता जलती दुनिया सारी
खुश होता वो पिता तरक्की हम करते जब भारी
वही सिखाता मेहनत कर लो वरना जीवन काला है
पिता श्रेष्ठ है इस दुनिया में जीवन देने वाला है

भाई बहन और परिजन का ध्यान पिता ही रखते
भूखे ही रह जाते हैं वो बालभोग सब चखते
सबको तृप्त कर रहा पहले पाया बाद निवाला है
पिता श्रेष्ठ है इस दुनिया में जीवन देने वाला है

कितने कष्टों से पाला है इसका पता लगाओ
अरमानों को घोटा होगा दिल की जांच कराओ
बीमारी में रोया होगा आंसू गुम कर डाला है
पिता श्रेष्ठ है इस दुनिया में जीवन देने वाला है

वेतन, पेंशन या मजदूरी पुत्रों को दे डाली
प्रॉपर्टी भी सौप रहे हैं भले खा रहे गाली
नाम, गोत्र, उपनाम सर्वदा पापा देने वाला है
पिता श्रेष्ठ है इस दुनिया में जीवन देने वाला है

अगर चाहते रहे आपका सुखमय सब परिवार
तो फिर देव तुल्य पापा को देना नहीं बिसार
वृद्धाश्रम में पिता गया तो समझो चेहरा काला है
पिता श्रेष्ठ है इस दुनिया में जीवन देने वाला है

आधी रोटी खाओ घर में गीत खुशी के गाओ
लेकिन पहले देवतुल्य पापा का आशिष पाओ
आशीर्वाद मिले देवों सा यह वरदान निराला है
पिता श्रेष्ठ है इस दुनिया में जीवन देने वाला है

बागवान बनने मत देना भूलो छोटे झगड़े
साथ पिता के रहो अंत तक हाथ पकड़कर तगड़े
सेवा ना 'अचूक' कर पाए पापा सुरपुर वाला है
पिता श्रेष्ठ है इस दुनिया में जीवन देने वाला है

सुपर ब्राण्ड

‘नभवाणी-डीडी’ बनी, अब सबको है खास
नमन आप सबको करूं, करते जो विश्वास
करते जो विश्वास, भरोसा खूब जताया
कोविड में रेडियो और टीवी ही भाया
दे दी प्रभु ने सतयुग-द्वापर सी नभवाणी
अब सबसे है बनी खास ‘डीडी-नभवाणी’

सुन्दरता

चौराहे बदल गए अपने पीलीभीत में
रंगत नजर आती इनकी काफी खास है
सिकुड़े हुए थे अब आ गए निज रूप में
जगमग हुए सभी, सुन्दरता का वास है
जो भी देखे वाह वाह करता है अनायास
तस्वीर बदली है तो, जनता में उल्लास है
पुलकित खरे जी की जयकार होने लगी
मन-मंदिर में अब विकास की ही आस है